धर्म प्रतिष्ठान के तत्वावधान मे स्थापित School of Applied Spirituality अग्नियोग आश्रम में 15 से 20 दिसम्बर 2016 को समाजसुधारक आध्यात्मिक गुरू स्वामी अग्निवेश जी के सानिध्य में **संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्राप्ति हेतु क्रियात्मक आध्यात्म की भूमिका** *विषय पर देवदूतों के लिए पाँच दिवसीय आवासीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देश–विदेश के 68 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण शिविर के दौरान सतत विकास लक्ष्य 2030, समसामयिक विश्व की प्रमुख समस्याओं और उनके निवारण के लिए स्थापित संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका, भारतीय संविधान में सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विवेचित प्रावधानों, वसुधैव कुटुम्बकम् की वैदिक विचारधारा, सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका और प्राकृतिक जीवनशैली विषयों पर सैद्धांतिक व व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रस्तुत प्रतिवेदन के माध्यम से धर्म प्रतिष्ठान का प्रयास है कि पाठकों को उक्त विषयों के संबंध में सारगर्भित और व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध हो सके। सुनिश्चित रूप से यह दस्तावेज़ आपको सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्राप्ति में अपनी भूमिका तय करने में मददगार साबित होगा।*

चन्दन कुमार मिश्र

*****

वसुधैव कुटुम्बकम एक नया सामाजिक आंदोलन है जो इस वसुंधरा पर के सभी जैविक–भौतिक अव्यवों के एक होने के सिद्धांत पर आधारित है। वसुधैव कुटुम्बकम के कार्यों को एक समेकित संस्थान – **स्कुल ऑफ अप्लाईड स्प्रीचुआलिटी** – द्वारा निष्पादित किया जा रहा है। इस संस्थान द्वारा मानवता और प्रकृति के असीम विविधता की सुंदरता और सभी जीवों में विविधता के बावजूद अंतर्निहीत एकता और महत्व को उजागर करने का प्रयास किया जा रहा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि, आज के समय में जिस आदर्शपूर्ण परिवर्तन की हम अपेक्षा कर रहे हैं उसके लिए हमें ऐसे समेकित प्रयास करने होंगे जिसके माध्यम से हम विविध राजनैतिक, आर्थिक, पारिस्थितिक, सामाजिक, न्यायिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयामों को सम्मिलित करते हुए और उनके अंर्तसंबंध को स्वीकार करते हुए सतत विकास के देवदूत बन सकें।

– **स्वामी अग्निवेश**

धर्म प्रतिष्ठान
(SCHOOL OF APPLIED SPIRITUALITY)

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्राप्ति हेतु क्रियात्मक आध्यात्म की भूमिका

धर्म प्रतिष्ठान
(SCHOOL OF APPLIED SPIRITUALITY)
7 – जंतर मंतर
नई दिल्ली – 110 001
dharmapratisthan@gmail.com
agnivesh70@gmail.com
www.swamiagnivesh.com
www.dharmapratisthan.org

संदेश

मानव यदि मानवीय मूल्यों को जीवन का पाथेय बना ले तो किसी के मानवीय अधिकारों का हनन नहीं होगा और अंत्योदय से सर्वोदय की दिव्य प्रेरणा को अपना नैतिक दर्शन के रूप में आत्मसात करके वह वसुधैव कुटुम्बकम अर्थात विश्व एक परिवार की वैदिक संकल्पना को साकार कर सकता है। इस आदर्श परिकल्पना के साकार होने पर संपूर्ण विश्व में शांति की स्थापना हो सकेगी और पूरी समष्टि का सतत विकास होगा।

धर्म और संप्रदाय के नाम पर, और व्यक्ति विशेष का संपूर्ण विश्व पर एकछत्र वर्चस्व की कुत्सित महत्वकांक्षा के कारण मानवीय सभ्यता हज़ारों वीभत्स युद्धों की त्रासदी झेल चुका है और कई बार मानवीय समाज को नृसंश सामुहिक हत्या की पीड़ा तक झेलनी पड़ी है। धार्मिक क्रांति, राष्ट्रवाद और कुत्सित महत्वकांक्षा के लोलूप सत्ता के लालची चंद लोग पूरी धरती के संसाधनों को हथियाने के लिए कई बार प्रयास कर चुके हैं। आए दिन कुटनीतिक, रणनीतिक, और राष्ट्र हितों का हवाला देते हुए आधुनिक विश्व के तथाकथित संपूर्णप्रभुत्व संपन्न सैन्यकृत राष्ट्र के स्वघोषित नुमाइंदे मनमाने ढ़ंग से वैश्विक संसाधनों का दोहन करने का प्रयास करते रहते हैं। उनके हस्तक्षेप से आएदिन युद्ध के आसार पैदा होते रहते हैं। वैश्विक तापवृद्धि, जलवायु परिवर्तन और आईएसआईएस जैसे वैश्विक आतंकवाद की समस्याऐं कहीं न कहीं इन्हीं लालची लोगों की देन है। लालची और शोषक पुंजीपतियों के ऐजेन्ट के रूप में इन लोगों ने अपने प्रतिनिधित्व और मत के वर्चस्व का तांडव करके संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे सक्षम वैश्विक संगठन को भी मूकदर्शक बने रहने पर मज़बूर कर दिया है। यदि इनके हितों को पुष्ट करने वाले वैश्विक आर्थिक गतिविधियों को सरल करनेवाले प्रस्ताव हों तो ये सर्वसम्मति से उसे स्वीकृति दे देते हैं और संपूर्ण समाज को लाभ पहुँचानेवाले प्रस्तावों पर वीटो पावर अर्थात निषेधाधिकार का प्रयोग करके ये वैश्विक संगठनों को भी पंगु बना देते हैं। अब समय आ गया है कि व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक मानव को इस संस्थागत चक्रव्युह के बारे में संवेदनशील बनाया जाए ताकि वे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से मिलकर इस संस्थागत हिंसा के महादावन से दो–दो हाथ कर सकें और भावी पीढ़ी के लिए एक ऐसे विश्व और विश्व–व्यवस्था का निर्माण कर सकें जिसके माध्यम से सबके लिए समता, समानता और स्वतंत्रता की सहज उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। सतत विकास की संकल्पना साकार हो सके।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा विकेन्द्रीकृत सामाजिक योजना निर्माण प्रक्रिया के माध्यम से विश्व के अलग–अलग कोने से पृथ्वी पर जीवन की सततता को बनाए रखनेवाले **सतत विकास लक्ष्य 2030** का निर्धारण किया गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वैश्विक स्तर पर संयुक्त राष्ट्रसंघ के मार्गदर्शन में मानवाधिकारों को अपना मार्गदर्शक माननेवाले राष्ट्रों, संगठनों और व्यक्तिगत नेतृत्वकर्त्ताओं द्वारा विपुल राशी में संसाधनों की व्यवस्था एवं समुचित प्रबंधन करने की युद्धस्तरीय और अनवरत प्रयास भी किए जा रहे हैं। इस महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जन भागेदारी के रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा सामाजिक, प्रशासनिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक मंचों पर ''मानवता के प्रवर्तकों/देवदूतों/स्वयंसेवकों (Agents of Transformation)'' द्वारा सक्रिय भूमिका निभाने की नितांत आवश्यकता प्रतीत हो रही है।

वसुधैव कुटुम्बकम के वैश्विक मानवीय मूल्यों पर संगठित एवं कार्यशील स्थानीय और वैश्विक तंत्र के माध्यम से ही परंपरागत, गैर–परंपरागत और नवाचारी प्रयोगों द्वारा सामुदायिक सामंजस्य स्थापित करते हुए काम करने से **सतत विकास लक्ष्य 2030** के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। व्यक्तिगत स्तर पर समाज को नेतृत्व प्रदान करनेवाले सक्रिय सरकारी कर्मचारियों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, सरकार के अधीन वरिष्ठ प्रशासकीय पदों पर आसीन होकर समाज की सेवा करने की लालसा रखनेवाले प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रतिभागियों और राजनैतिक दलों के साथ मिलकर जनता के दुख–दर्द में समानुभूति रखने वाले राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं की इस महान कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका होगी। अर्थात, इन्हें भावी भविष्य के लिए पर्याप्त दक्षता और कौशल प्राप्त करना ही होगा।

वैश्विक स्तर पर धार्मिक नेताओं और आस्था–आधारित संस्थानों द्वारा सतत विकास लक्ष्य 2030 की चुनौतियों का सामना करने के लिए बहुआयामी प्रयास किए जा रहे हैं। ये अपने नेटवर्क और संसाधनों का प्रयोग करके गरीबी निवारण की अपनी वचनबद्धता और सामाजिक न्याय को स्थापित करने वाले आंदोलनों के माध्यम से ये सतत विकास लक्ष्य 2030 की उपलब्धि के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। वैश्विक स्तर पर इस दिशा में युद्धस्तरीय कार्य किया जा रहा है। **वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के वार्षिक बैठक** में भी आगामी 17 से 20 जनवरी, 2017 के दौरान **दाबोस (स्वीटज़रलैण्ड)** में इस विषय पर वैश्विक विचारगोष्ठी का आयोजन भी किया जा रहा है। इस कार्य{म में स्वामी अग्निवेश जी भी शिरकत करेंगे।

चन्दन कुमार मिश्र
प्रबंधन सलाहकार
धर्म प्रतिष्ठान
myvidya@outlook.com

धर्म प्रतिष्ठान :एक परिचय

स्थापना

धर्म प्रतिष्ठान ट्रस्ट की स्थापना 7 दिसम्बर 1979 को की गई थी।

मिशन

मानवीय मूल्यों के आधार पर विश्व के नागरिकों को जाति, रंगभेद, लिंग, संप्रदाय, मज़हब, और राष्ट्रीयता की सीमाओं से उपर उठकर मानवीय मूल्यों और ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' अर्थात ''विश्व एक परिवार'' की दैवीय विचारधारा से एक परिवार के रूप में संगठित करना ताकि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित समरस समाज की रचना हो सके।

स्थापना के लक्ष्य और उद्देश्य

इस ट्रस्ट की स्थापना इस उद्देश्य के साथ किया गया था कि;

1. ध्यान, भक्ति, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए कक्षाओं का आयोजन और समन्यवन किया जा सके और ऐसे प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की जा सके जिसके माध्यम से उक्त उद्देश्यों की पूर्ति इस दृष्टिकोण के साथ की जा सके कि, मानवीय स्वास्थ्य, समझ, आचरण और चेतना के सभी आयामों का प्रोत्साहन, सवंर्द्धन और सुधार हो सके।
2. इच्छुक व्यक्तिओं को उपरोक्त महत्वपूर्ण विषयों और उससे संबद्ध विषयों के अध्ययन और शोध के लिए के स्टाईपेंड, स्कॉलरशिप और अन्य सुविधाऐं उपलब्ध कराई जा सके ताकि वे अपने महान उद्देश्य को प्राप्त कर सकें।
3. बीमार, अपंग, गरीब और जरूरतमंद व्यक्तियों और उनकी संस्थाओं व संस्थानों तथा इनके कल्याण के लिए काम करनेवाली संस्थानों को अनुदान, सहयोग, उपहार, सब्सक्रिप्शन, मौद्रिक या वित्तीय सहयोग के माध्यम से ग्राण्ट रिलिफ दिया जा सके।
4. सभी प्रकार के चैरिटेबल संस्थानों की स्थापना, संचालन, व्यवस्था अथवा/और सहयोग राशि, सब्सक्रिप्शन या दान के माध्यम से वित्तीय अनुदान ग्राण्ट या सहयोग दिया जा सके।
5. भूकंप, सुखा, अकाल, बाढ़ या इसी प्रकार के अन्य विपदाओं से होनेवाली तबाही या आपदाओं में राहत कार्य करनेवाले संस्थाओं को अनुदान दिया जा सके।
6. शैक्षणिक संस्थानों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यापीठों, गुरूकुलों, शोध संस्थानों, प्रयोगशालाओं और वर्कशॉप की स्थापना करना ताकि उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।
7. सामान्यतौर पर ऐसे अन्य सभी कार्य करना जो लोक कल्याण और लोकोपयोगी हो। साथ–ही साथ जाति, नस्ल और धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करना और लाभ के लिए कोई काम नहीं करना।

अग्नियोग आश्रमः

हरियाणा राज्य के गुरूग्राम जिला के सोहना प्रखण्ड के बहल्पा गाँव में गुड़गाँव–सोहना रोड पर शांत और रमणीक वातावरण में स्थित अग्नियोग आश्रम नैसर्गिक प्राकृतिक परिवेश में स्थापित एक आध्यात्मिक केन्द्र है। यह आश्रम दिल्ली के कनाट प्लेस से 60 किलोमीटर दूर, हुडा सिटी मेट्रोस्टेशन से 30 किलोमीटर दूर स्थित है। इस आश्रम में स्वामी अग्निवेश के सानिध्य में प्रशासनिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, व्यवसायिक और आध्यात्मिक कार्यों द्वारा समाज में अपना योगदान देनेवाले कार्यकर्त्ताओं के व्यक्तित्व को परिष्कृत और रूपांतरित करने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। **वसुधैव कुटुम्बकम** की वैदिक और वैश्विक विचारधारा के अनुसार एक विश्व परिवार की संकल्पना को साकार करने का संकल्प रखने वाले कार्यकर्त्ताओं के विश्वास को पुष्ट करने और सामाजिक गतिविधि की रणनीतियों व विधाओं में कुशलता लाने के लिए समर्पित अग्नियोग आश्रम आप सभी का हार्दिक अभिनंदन करता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय

''धर्म प्रतिष्ठान'' के तत्वावधान में **''वसुधैव कुटुम्बकम (The World is a Family)** के वैश्विक मानवीय सिद्धांत पर स्थापित **School of Applied Spirituality, अग्नियोग आश्रम** में **सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्राप्ति हेतु क्रियात्मक अध्यात्म की भूमिका** विषय पर वर्तमान नेतृत्वकर्त्ताओं के गुणों को विकसित करने के लिए 15 से 20 दिसम्बर 2016 के दौरान **पाँच दिवसीय आवासीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण के लक्ष्य :

प्रतिभागियों के व्यक्तित्व का सामाजिक–सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूपांतरण करना ताकि उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हो और उनका कार्यप्रदर्शन उत्कृष्ट हो जाए। वे समुदाय में शैक्षणिक, सामाजिक, प्रशासनिक, राजनैतिक, व्यवसायिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूपांतरण के वाहक बन सकें ताकि अपने सार्थक पहल द्वारा वे सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग कर सकें।

प्रशिक्षण के उद्देश्य :

1. वसुधैव कुटुम्बकम के नैतिक मूल्यों–सत्य, अहिंसा, समानुभूति, करूणा, दया, समानता और समान गरिमा के मानवीय मूल्यों के आधार पर प्रतिभागियों के व्यक्तित्व और आचरण का आध्यात्मिक और नैतिक रूपांतरण करना।
2. प्रतिभागियों को सतत विकास लक्ष्य 2030 पर उन्मुखीकरण और क्षमता विकसित करना।
3. प्रतिभागियों को समसामयिक वैश्विक–सामाजिक मुद्दों की समझ बनाने में मदद करना और संयुक्त राष्ट्र संघ एवं संबंधित अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के संबंध में उन्मुख करना।
4. प्रतिभागियों को क्रियात्मक अध्यात्म (Applied Spirituality) के आयामों और व्यवहारों पर क्षमता विकसित करना और इसके आधार पर सतत विकास लक्ष्य 2030 की चुनौतियों से निपटने की रणनीति बनाने का प्रशिक्षण देना।
5. प्रतिभागियों को भारतीय समाज के प्रमुख सामाजिक मुद्दों, संवैधानिक उपबंधों, और सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देना ताकि वे सामाजिक न्याय के सिद्धांतों और व्यवहारों के अनुसार अपना व्यवहार बदल सकें।
6. प्रतिभागियों को सतत विकास के कृषि आधारित आर्थिक मॉडल और प्राकृतिक जीवनशैली की जानकारी देना और क्षमता विकसित करना ताकि वे अपने–अपने कार्यक्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक विकास का नेतृत्व कर सकें।
7. नेतृत्व कौशल के विविध आयामों पर प्रतिभागियों के व्यक्तित्व का विकास करना ताकि वे सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्व कर सकें।
8. समसामयिक समाज हेतु रचनात्मक कार्यों की रूपरेखा तैयार करना ताकि प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत प्रतिभागी सामाजिक विकास में अपनी सकारात्मक भूमिकाओं का निर्वाह कर सकें।

लक्षित प्रतिभागी :

सरकारी/गैर–सरकारी सेवाओं में नियुक्त कार्यकर्त्ता, सामाजिक संस्थाओं से जुड़े स्वयंसेवक/कार्यकर्त्ता, स्नातक/परास्नातक एवं शोध करने वाले युवा विद्यार्थी, संघ लोक सेवा आयोग एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले प्रतिभागी, राजनैतिक पार्टियों से जुड़े कार्यकर्त्ता,मीडिया क्षेत्र के समर्पित कार्यकर्त्ता एवं बुद्धिजीवी इस प्रशिक्षण शिविर में भाग लेकर अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत किया।

प्रशिक्षण विधि : सहभागी प्रशिक्षण तकनीक के आधार पर प्रशिक्षण दिया गया। ऑडियो–विजुअल प्रस्तुतीकरण, प्रदर्शन, डेमॉन्स्ट्रेशन, पात्र–अभिनय, मति–मंथन सत्र, घटना–अध्ययन (केस–स्टडी), कहानी वाचन, समूह चर्चा और खेल इत्यादि प्रशिक्षण विधियों का प्रयोग किया गया।

प्रशिक्षण शिविर के सम्माननीय प्रशिक्षक गण :

1. **स्वामी अग्निवेश :** प्रबंध न्यासी, धर्म प्रतिष्ठान, राइट लाइव्लीहुड अवार्डी स्वामी अग्निवेश जी के दिशा निर्देश में ही इस कार्यक्रम का संपादन हुआ।
2. **डॉ. ग्लेन टी मार्टिन :** अध्यक्ष, विश्व संविधान एवं संसद संगठन।
3. **डॉ. वेद प्रताप वैदिक :** वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनैतिक चिंतक।
4. **श्री अगस्टीन जे वेलिथ :** भूतपूर्व एडवोकेसी डायरेक्टर, युनिसेफ।
5. **श्री वी. एन. राय :** भूतपूर्व डी. जी. पी., हरियाणा।
6. **श्री आनंद कुमार :** भूतपूर्व डीजीपी।
7. **डॉ. ब्रजेन्द्र आर्या :** प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक।
8. **डॉ अंजनी कुमार :** कृषि विज्ञान केन्द के समन्यवक।
9. **चन्दन कुमार मिश्र :** प्रबंधन सलाहकार, धर्म–प्रतिष्ठान।
10. **पुनम आर्या :** महिला सामाजिक कार्यकर्त्ता, महिला समता मंच।
11. **प्रवेश आर्या :** महिला सामाजिक कार्यकर्त्ता, महिला समता मंच।

प्रशिक्षण शुल्क :

अग्नियोग आश्रम के द्वारा पाँच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शिविर के दौरान आवासीय सुविधा, भोजन एवं प्रशिक्षण सामग्री और प्रशिक्षण की व्यवस्था धर्म प्रतिष्ठान ने किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सत्रवार विवरण

प्रशिक्षण की तैयारी

सर्वप्रथम स्वामी अग्निवेश जी के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण के विषयों का निर्धारण किया गया। इसके बाद प्रशिक्षकों से पत्राचार के माध्यम से स्वीकृति ली गई। तत्पश्चात प्रशिक्षुओं को सूचित किया गया। अग्नियोग आश्रम में आवासीय और रसोई व्यवस्था और प्रशिक्षण कक्ष को चुस्तदुरूस्त बनाया गया। फेसबुक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का विज्ञापन भी दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अधिकांश सत्रों का संचालन मुक्ताकाश में वृक्षों के बीच किया गया ताकि प्राकृतिक वातावरण में शुद्ध हवा और सूर्य प्रकाश की उपलब्धता में ही अधिकांश सत्रों का संचालन हो जाए।

प्रशिक्षण में भाग लेनेवाले सम्मानित अतिथिगण

1. **स्टीफन इग्नेड :** फ्रांस के शोधार्थी जो सस्टेनेबल डेभलपमेन्ट ग्लोबल नेटवर्क (एसडीजीएन) के साथ जुड़कर विश्वभर में ''शांति क्लब'' की स्थापना करके विद्यार्थियों को वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा से जोड़ रहे हैं।
2. **ज़ेरी वेफेल :** ज़ेरी वेफेल चीन में सतत विकास के लक्ष्यों के आधार पर सामाजिक कार्य कर रही हैं।
3. **मैरेक वासिन्सकी :** मैरेक वासिन्सकी सस्टेनेबल डेभलपमेन्ट ग्लोबल नेटवर्क (एसडीजीएन) के संस्थापक हैं। ये युनिवसिर्टी ऑफ मेसाचुटेस अमेरिका के प्राध्यापक भी हैं।
4. **ब्रैडली क्लेडिऑन्स :** ये अमेरिका के निवासी हैं और युनिवसिर्टी ऑफ मेसाचुटेस अमेरिका के शोधार्थी हैं।
5. **अल्जांड्रा मोनिला :** ये मैक्सिको की निवासी हैं और युनिवसिर्टी ऑफ मेसाचुअेस अमेरिका के शोधार्थी हैं।
6. **सुमित कुलश्रेष्ठ :** सुमित कुलश्रेष्ठ नेपाल के निवासी हैं और सस्टेनेबल डेभलपमेन्ट ग्लोबल नेटवर्क (एसडीजीएन) के साथ मिलकर सामाजिक विकास के कार्य कर रहे हैं।
7. **शिल्पा जैन :** शिल्पा जैन मशहूर आर्किटेक्ट हैं।
8. **प्रशान्त चौहान :** प्रशान्त चौहान शिल्पाजैन के सहकर्मी हैं।
9. **विजेता आर्या :** विजेता आर्या प्राकृतिक चिकित्सक हैं।
10. **फिरोज़ खान :** फिरोज़ खान एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं और ये गोरक्षा अभियान चला रहे हैं।
11. **तनवीर खान :** तनवीर खान सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता हैं।
12. **स्वामी त्रिलोकनाथ महाराज :** स्वामी त्रिलोकनाथ महाराज गुजरात के मठाधीश हैं।
13. **के. के. शरचंद बोस :** के के शरचंद्र बोस दुबई के प्रसिद्ध अधिवक्ता हैं।
14. **संजय जैन :** संजय जैन एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं।
15. **लालेश्वर पाण्डेय :** लालेश्वर पाण्डेय उत्तर प्रदेश के राजनैतिक कार्यकर्त्ता हैं।
16. **महंत भाई तिवारी :** महंत भाई तिवारी बंधुआ मुक्तिमोर्चा के कार्यकारी निदेशक हैं।
17. **नित्येन्द्र मानव :** नित्येन्द्र मानव राजस्थान में शराबबंदी के लिए आंदोलन चला रहे हैं।

प्रशिक्षण के प्रतिभागियों का विवरण

1. **रविकान्त :** रविकान्त एमसीए कर चुके हैं और वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा को अपना जीवन दर्शन बनाकर अपना जीवनयापन कर रहे हैं।
2. **सुखवीर सिंह :** सुखवीर सिंह योगाचार्य हैं। ये योग शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवन की शिक्षा दे रहे हैं। इन्होंने कार्यशाला के दौरान भी प्रतिभागियों को विभिन्न योगासनों को दिखाया और प्रशिक्षण की व्यवस्था में इन्होंने सक्रिय योगदान दिया।
3. **आर्य पवन पागल :** आर्य पवन पागल एक कवि और चित्रकार हैं। इन्होंने प्रशिक्षण में सक्रिय भूमिका निभाई। इन्होंने आश्रम परिसर में चित्रकारी भी की।
4. **मंजीत कुमार :** मंजीत कुमार मुज़फ्फरपुर, बिहार के सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। इन्होंने स्वामी अग्निवेश जी के स्थानीय कार्यक्रमों में भी शामिल होते रहे हैं।
5. **सुशील कुमार मिश्रा :** सुशील कुमार मिश्रा एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। ये फिरोज़ खान के साथ काम करते हैं।
6. **राजा चौधरी :** राजा चौधरी दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई कर रहे हैं। ये लेखनकार्य भी कर रहे हैं।
7. **दर्शन आर्य :** दर्शन आर्य शास्त्री हैं और ये आर्यसमाज की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हैं।
8. **रोहतास :** रोहतास एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं।
9. **कर्मवीर हान सिंह :** कर्मवीर हान सिंह आर्यसमाज के गुरूकूल के संचालक हैं।
10. **सुरजमल :** सुरजमल सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं।
11. **विजय कुमार :** विजयकुमार सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं।
12. **वेदांश आर्य :** वेदांश आर्य कायाकल्प नेचर क्योर क्लिनिक के संचालक हैं।
13. **फुलकिरण प्रीति शास्त्री :** फुलकिरण प्रीतिशास्त्री आर्यसमाज के गुरूकुल में अध्ययनरत हैं।
14. **सविता :** सविता अल्पसंख्यक वर्ग से संबंधित हैं। ये आर्यसमाज के गुरूकुल में अध्ययनरत हैं।

15. **मीरा कुमारी :** मीरा कुमारी भी गुरूकुल की छात्रा हैं।
16. **ज़ंगीर :** जंगीर एक पत्रकार हैं।
17. **सुरेश कुमार सिसोदिया :** सुरेश कुमार सिसोदिया एक मीडिया सलाहकार हैं। इन्होंने पूरे प्रशिक्षण की विडियो रिकार्डिंग की। इन्होंने स्थानीय पत्रकारों से समन्वय करके प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में प्रेस मीटिंग भी कराया। पाँच अलग अलग समाचारपत्रों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्टिंग की।
18. **हरप्रीत :** हरप्रीत इंटर के विद्यार्थी हैं। ये अपने कॉलेज में विद्यार्थियों के साथ वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांतों की चर्चा करते हैं। ये आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती की विचारों से प्रेरित हैं।
19. **कल्याण सिंह आर्य :** कल्याण सिंह आर्य आर्यसमाज के प्रचारक हैं। ये मज़दूरों और किसानों के हितों के लिए आंदोलन करते हैं।
20. **विपिन आर्य :** विपिन आर्य एक पत्रकार हैं। ये आर्यसमाज की विचारधाराओं के आधार पर अपना जीवनयापन करते हैं।
21. **राधेश्याम :** राधेश्याम सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। ये अग्नियोग आश्रम की देखरेख में श्री अश्विनी जी की सहायता करते हैं।
22. **महेश सायता :** महेश सायता उड़ीसा के सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। ये गाँधी जी के स्वच्छता के सिद्धांतो के आधार पर जीवन जीते हैं। इन्होंने आश्रम में शौचालय की साफसफाई में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।
23. **भीमराज बैग :** भीमराज बैग एक अधिवक्ता हैं। ये मानवाधिकारों के लिए काम करते हैं।
24. **आदित्य आर्य :** आदित्य आर्य डीएवी स्कूल के अष्ठम वर्ग के छात्र हैं। इन्होने आर्यसमाज के सिद्धांतों पर जीवन जीने का लक्ष्य बनाया है। ये अपने विद्यालय में विद्यार्थियों के साथ समूह बनाकर शाकाहार को अपनाने का आग्रह करते हैं।
25. **प्रवीण अत्री :** प्रवीण अत्री डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य के मार्गदर्शन में प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाकर समाज सेवा कर रहे हैं।
26. **साहिल सिंह :** साहिल सिंह भी डॉ. ब्रजेन्द्र कार्य के मार्गदर्शन में प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाकर समाजसेवा कर रहे हैं।
27. **रधुवेन्द्र सिंह :** रधुवेन्द्र सिंह किसान हैं।
28. **जयपाल :** जयपाल भी एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं।
29. **कुमारी रीमा आर्या :** कुमी रीमा आर्या विद्यार्थी हैं। ये प्रवेश आर्या और पूनम आर्या के साथ मिलकर किशोरी लड़कियों के सशक्तिकरण का काम कर रही हैं।
30. **कुमारी पुजा आर्या :** कुमारी पुजा आर्या भी प्रवेश आर्या और पूनम आर्या के साथ मिलकर किशोरी लड़कियों के सशक्तिकरण का काम कर रही हैं।
31. **सुनील कुमार वर्मा :** सुनिल कुमार वर्मा प्रकाशन का काम देखते हैं।
32. **हंसराज भारतीय :** हंसराज भारतीय सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। ये दलितों के उत्थान के लिए कार्य करते हैं।

प्रथम दिवस : 15 दिसम्बर 2016

आगमन व पूर्व–तैयारी

दिनांक 14 दिसम्बर 2016 को ही राजा चौधरी (जो फेसबुक कैंपिंग के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़े थे) के साथ मैं अग्नियोग आश्रम बहल्पा आ गया था। रात्रि में अपनी आवासीय व्यवस्था को हम दोनो ने मिलकर व्यवस्थापित किया और बाहर जाकर भोंड़सी चौक पर रात्रिभोजन किया। रात्रि में राजा चौधरी से प्रशिक्षण कार्यक्रम और व्यक्तिगत परिचय की कुछ औपचारिक बातें हुई। गुरूवार, 15 दिसम्बर 2016 को सुबह जल्दी उठकर राजा चौधरी प्रातः भ्रमण के लिए चले गए। वापस आने के बाद हमलोगों ने मिलकर आश्रम में प्रशिक्षण कक्ष और बैनर की व्यवस्था को दुरूस्त करने में धनश्याम का सहयोग किया। तबतक रविकान्त जी भी आ गए थे। इन्होंने प्रोजेक्टर और प्रशिक्षण कक्ष सेट करने में हमारा सहयोग किया। अश्विनी भाई पूरी तन्मयता से भोजन का प्रबंध कर रहे थे। तकरीबन 10:00 बजे सुबह श्री अगस्टीन जे वैलिथ के साथ आर्किटेक्ट शिल्पा जैन और प्रशान्त चौहान का भी आगमन हुआ। इन्होंने आश्रम का मुआयना किया और इंटिरियर डिज़ायनिंग के बारे में सूचना एकत्र कर ही रहे थे कि बीरेन्द्र सोनी की अगुआई में 11:30 बजे हमारे विदेशी अतिथियों का दल अग्नियोग आश्रम में पधारा। साथ–ही साथ अन्य प्रतिभागियों का आगमन प्रारंभ हो गया।

सत्र : स्वागत और लक्षित समूह परिचर्चा

संसाधन व्यक्ति : प्रो. मैरिक वासिन्सकी, मैसाचुटेस युनिवर्सिटी, संयुक्त राष्ट्र अमेरीका

स्वागत और लक्षित समूह परिचर्चा के दौरान हम अपने मेहमान से परिचित हुए और उन्हें अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में भी अवगत कराया। वसुधैव कुटुम्बकम, सतत विकास लक्ष्य 2030 और मानवीय मूल्यों पर आधारित क्रियात्मक आध्यात्म के सैद्धांतिक और व्यवहारिक पहलुओं पर युनिवर्सिटी ऑफ मेसाचुटेस के प्राध्यापक *मैरिक वासिन्सकी* (संयुक्त राष्ट्र अमेरीका) आए जो सस्टेनेबल डेभलपमेन्ट ग्लोबल नेटवर्क (एसडीजीएन) के संस्थापक भी हैं। इनके नेतृत्व में फ्रांस के शोधार्थी *स्टीफन इन्गेड* (जो सस्टेनेबल डेभलपमेन्ट ग्लोबल नेटवर्क (एसडीजीएन) के साथ जुड़कर विश्वभर में ''शांति क्लब'' की स्थापना करके विद्यार्थियों को वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा से जोड़ रहे हैं), *ज़ेरी वेफेल* (चीन में सतत विकास के लक्ष्यों के आधार पर सामाजिक कार्य कर रही हैं, *ब्रैडली क्लेडिऑन्स* (ये अमेरिका के निवासी हैं और युनिवसिर्टी ऑफ मेसाचुटेस अमेरिका के शोधार्थी हैं), *अल्जांड्रा मोनिला* (ये मैक्सिको की निवासी हैं और युनिवसिर्टी ऑफ मेसाचुअेस अमेरिका के शोधार्थी हैं) और *सुमित कुलश्रेष्ठ* (नेपाल के निवासी हैं और सस्टेनेबल डेभलपमेन्ट ग्लोबल नेटवर्क (एसडीजीएन) के साथ मिलकर सामाजिक विकास के कार्य कर रहे हैं) आए। तत्पश्चात धर्म प्रतिष्ठान और वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा पर आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में उन्हें जानकारी दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व के प्रति गंभीर होकर *प्रो मैरिक* ने कहा कि, ''आज पूरी दूनिया मज़हब और धर्म के नाम पर बँटी हुई है। लोग अपने पंथ के कट्टर समर्थक हो गए हैं। यहाँ तक कि अपने धर्म और मज़हब के खिलाफ बोलने वालों का कत्ल करने से भी वे नहीं कतराते। ऐसी परिस्थिति में आपलोग मानवीय मूल्यों पर पूरे समाज को जोड़ने और एक विश्व परिवार बनाना चाहते हैं यह आज के मानवीय सभ्यता की आवश्यकता है। फिर भी आपको सोंचना होगा कि आप किस प्रकार का परिवार बनाना चाहते हैं? कि प्रकार से लोगों को जोड़ेंगे? किस प्रकार से विविध मतावलंबी आपकी विचारधारा से जुड़ेंगे और सहयोग करेंगे? इन मूद्दों पर सोच–विचार कर पहल करना अधिक सहयोगी सिद्ध होगा। प्रश्नों की गंभीरता को समझते हुए मैंने उनसे आग्रह किया कि वे समूह चर्चा के रूप में लक्षित समूह परिचर्चा का संचालन करें और सभी प्रतिभागी इन प्रश्नों के सापेक्ष में अपनी राय रखेंगे। इस चर्चा के दौरान यह निकल कर आया कि, सभी धर्मों में कुछ समान मानवीय मूल्य होते हैं। जिन्हे सब स्वीकार करते हैं। यदि हम उन मानवीय मूल्यों के अनुपालन की वकालत करेंगे तो लोगों को वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा से जुड़ने और सहयोग करने के लिए अपनी जन्मजात जातिगत संस्कारों से परे जाकर हमारे साथ जुड़ेंगे और इस आध्यात्मिक क्रांति में सहयोग करेंगे। *स्टीफन इंग्रेड* ने कहा कि सबलोग अपने मजहब से बहुत प्यार करते हैं। इनमें से कुछ अतिवादी तो यहाँ तक मानते हैं कि, उन्हीं का धर्म सबसे अच्छा है। ऐसे संकुचित मनोदशा वाले कुछ लोग उग्रवादी आतंकवाद तक का रास्ता अपनाते हैं और उनमें से कुछ विकृत मानसिकता वाले तो अपने मज़हब का प्रचार प्रसार करने और अपने मज़हब के नाम पर अन्य मज़हब के लोगों का हत्या तक करने के लिए यूवाओं को गुमराह कर देते हैं। ये गुमराह युवा ऐसे जन्नत (इसके आस्तित्व के बारे में भी लोग आश्वस्त नहीं हैं) के नाम पर जहाँ ऐशोआराम के लिए शराब और अप्सराओं पर कोई पाबंदी नहीं होगी; आतंकवादी दुर्घटनाओं को अंजाम देते हैं और अपने ही भाई, बहन, माता पिता सरीखे इंसानों की नृशंश हत्या कर देते हैं। इस वैश्विक चुनौती से निपटने के लिए आज जरूरत है कि अतिवादियों को वसुधैव कुटुम्बकम की आपसी भाईचारे की भावना और परस्पर प्रेम व सौहार्द के व्यवहार को प्रेरित करने वाले सभी मज़हबों द्वारा अपनाए जानेवाले *धार्मिक मानवीय मूल्यों* के बारे में जानकार बनाया जाए। इससे शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की आदर्श स्थिति को स्थापित किया जा सकता है। इसके बाद, स्वामी अग्निवेश जी द्वारा वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांतों पर बनाए गए सात महत्वपूर्ण प्रश्नों पर समूह चर्चा की गई। **(बॉक्स : 1)** इस चर्चा के बीच में हमने भोजनावकाश विश्राम भी लिया। खाना खाने के बाद तक लगभग सभी प्रतिभागी आ गए थे। पुनः प्रशिक्षण कक्ष में चर्चा प्रारंभ हुई।

वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा के सात मौलिक प्रश्न

बॉक्स : 1

1. यदि सबका ईश्वर एक है तब, ईश्वर के संतानों के बीच असमानताऐं क्यों हैं? क्या कुछ लोग किसी निम्न स्तर के ईश्वर की संतान हैं?
2. हमें क्यों स्वयं को उच्च और निम्न जाति के नाम पर विभाजित होने देना चाहिए? क्या यह सत्य है कि एक ईश्वर ने अलग धर्म की व्याख्या की है और दूसरे ईश्वर ने दूसरे धर्म की? क्या आपको नहीं लगता कि, जाति, धर्म और राष्ट्र की सीमाऐं निरर्थक हैं? क्या इन बंधनों को मानवों ने नहीं बनाया है?
3. क्या हम लिंगभेद और यौन–अभिमुखता के आधार पर होनेवाले भेदभाव को महत्व दे सकते हैं अथवा इसके प्रति साहिष्णु व्यवहार रख सकते हैं? क्या ईश्वर पुरूष होंगे या स्त्री? हम क्यों पितृसत्तात्मक व्यवस्था को हमारे संबंधों का निर्धारक रहने दे सकते है?
4. क्या ईश्वर की इच्छा से ही बच्चे गरीब या अमीर के घर जन्म लेते हैं? क्या यह भेदभाव हमारी गलत और शोषक आर्थिक नीतियों का परिणाम नहीं है? सभी बच्चों को स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा का समान अवसर क्यों नहीं मिलना चाहिए?
5. यदि ईश्वर सर्वव्यापी है तो क्या हम ईश्वर के सत्य, प्रेम, करूणा और न्याय की लालसा के रूप में व्यक्तिगत रूप से अपने अंदर अनुभव नहीं कर सकते? क्या यह जरूरी है कि हम अंधी आस्था के आधार पर किसी विशेष पुस्तक या पैगम्बर या अवतार का अनुशरण करें?
6. तथाकथित बुजुर्गों द्वारा क्या एक अबोध बच्चे पर रीति–रिवाज़ों, और आडंबरकारी धार्मिक प्रथाओं को थोपा जाना चाहिए और उन्हें मानसिक रूप से इसके लिए प्रभावित किया जाना चाहिए?
7. हम अपने स्वाद की लालसा की तृप्ति मात्र के लिए किसी जानवर या पक्षी को क्यों मारें? हम पशु–पक्षियों का कृत्रिम

चर्चा के दौरान सभी प्रतिभागियों ने एकमत से माना कि :

- ✓ सबका ईश्वर एक है तब, ईश्वर के संतानों के बीच असमानताऐं मानवों द्वारा ही पैदा की गई हैं।
- ✓ हमें स्वयं को उच्च और निम्न जाति के नाम पर विभाजित नहीं होने देना चाहिए।
- ✓ यह सत्य नहीं है कि एक ईश्वर ने अलग धर्म की व्याख्या की है और दूसरे ईश्वर ने दूसरे धर्म की।
- ✓ हमें लगता कि, जाति, धर्म और राष्ट्र की सीमाऐं निरर्थक हैं। इन बंधनों को मानवों ने बनाया है।
- ✓ हम लिंगभेद और यौन–अभिमुखता के आधार पर होनेवाले भेदभाव को महत्व नहीं दे सकते हैं अथवा इसके प्रति साहिष्णु व्यवहार रख सकते हैं।
- ✓ ईश्वर पुरूष होंगे या स्त्री यह कोई इंसान नहीं बता सकता।
- ✓ हम पितृसत्तात्मक व्यवस्था को हमारे संबंधों का निर्धारक नहीं रहने दे सकते है।
- ✓ ईश्वर की इच्छा से ही बच्चे गरीब या अमीर के घर जन्म नहीं लेते हैं। यह भेदभाव हमारी गलत और शोषक आर्थिक नीतियों का परिणाम है। सभी बच्चों को स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा का समान अवसर जरूर मिलना चाहिए।
- ✓ ईश्वर सर्वव्यापी है तो हम ईश्वर के सत्य, प्रेम, करूणा और न्याय की लालसा के रूप में व्यक्तिगत रूप से अपने अंदर भी अनुभव कर सकते हैं।
- ✓ यह जरूरी नहीं है कि हम अंधी आस्था के आधार पर किसी विशेष पुस्तक या पैगम्बर या अवतार का अनुशरण करें।
- ✓ तथाकथित बुजुर्गों द्वारा एक अबोध बच्चे पर रीति–रिवाज़ों, और आडंबरकारी धार्मिक प्रथाओं को नहीं थोपा जाना चाहिए और उन्हें मानसिक रूप से इसके लिए प्रभावित नहीं किया जाना चाहिए।
- ✓ हम अपने स्वाद की लालसा की तृप्ति मात्र के लिए किसी जानवर या पक्षी को नहीं मारना चाहिए। हम पशु–पक्षियों का कृत्रिम व्यवसायिक, और औद्योगिक स्तर पर प्रजनन और नृशंश हत्या में भागीदार नहीं बनेंगे।

पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हमारे विदेशी मेहमान हमसे विदा हुए। इसके बाद सभी प्रतिभागियों के लिए रहने और खाने की व्यवस्था की गई। रात में पीके फिल्म के प्रसारण का कार्यक्रम था। किन्तु खाना और आवास की व्यवस्था करते हुए काफी समय हो गया था। खाना खाने के दौरान स्वामी अग्निवेश जी भी आश्रम में आ गए। खाना खाने के बाद पहले दिन की समीक्षा बैठक के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पानी गर्म करने, प्रतिभागियों को सुबह जगाने, योगा–प्राणायाम, रसोई प्रबंधन और अग्निहोत्र हवन के लिए प्रतिभागियों ने स्वेच्छा से अपनी ज़िम्मेदारी ली। प्रतिभागियो को **पूर्व–मूल्यांकन प्रपत्र** भी

दिया गया ताकि वे अपने विचारों को लिख कर प्रशिक्षकों को दे दें। तत्पश्चात, शुभ रात्रि की शुभकामनाओं के साथ प्रथम दिवस का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

द्वितीय दिवस : 16 दिसम्बर 2016

सत्र : अग्निहोत्र हवन
संसाधन व्यक्ति : स्वामी विजयवेश जी

स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी विज़यवेश जी और सभी प्रतिभागियों ने वैदिक विधि से अग्निहोत्र हवन किया। तत्पश्चात, स्वामी अग्निवेश जी ने हमें अग्निहोत्र हवन का प्रबंधन विज्ञान समझाया। स्वामी जी ने बताया कि, ''अग्निहोत्र हवन एक प्रकृति–वैज्ञानिक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। इसके माध्यम से प्रकृति प्रदत उत्पादों (समीधा, हवन सामग्री, घी, अग्नि, और जल) का वैज्ञानिक प्रबंधन के सिद्धांतों के अनुसार आहूति दी जाती है। इस वैदिक पद्धति के माध्यम से ब्रह्मा, यजमान, होता, अध्वर्यु, उद्गाता और सहयोगी हवनकर्त्ता के रूप में सभी प्रतिभागी एक दूसरे से संगठन–सुत्र में अनुशासित ढ़ंग से जुड़ जाते हैं और ब्रह्मा द्वारा निदेशित कार्य को यजमान संकल्प के रूप में धारण कर नेतृत्व करता है। इस कार्य में होता के माध्यम से यजमान को योजना निर्माण, अध्वर्यु के माध्यम से क्रियान्यवन और उद्गाता के माध्यम से संगठन के सदस्यो को एक दूसरे से जोड़े रखने की उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया जाता है। संस्कृत भाषा में रचित मंत्रों के माध्यम से भावविभोर होकर प्रकृति की भव्यता को स्वीकार किया जाता है और प्रकृति को बारम्बार ईश्वर की अनमोल कृति के रूप में सराहा जाता है। इसके साथ–ही पूरे समष्टि को साक्षी मानकर ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है कि हम उसकी प्रकृति में व्याप्त अज्ञान, अभाव और अन्याय को ज्ञान, श्री और यश के माध्यम से जीतेंगे और शाश्वत–शांति की स्थापना करेंगे।

इसके बाद प्राकृतिक चिकित्सक श्री ब्रजेन्द्र आर्य के मार्गदर्शन में प्रतिभागियों ने योग और ध्यान किया। दूसरे दिन से यह तय किया गया कि, हम पहले योग, ध्यान करेंगे और फिर हवन करेंगे। इसके बाद सभी प्रतिभागियों ने जलपान किया। जलपान के पश्चात हम सभी मुक्ताकाश में एक गोला बनाकर दिन के अगले सत्र के लिए एकत्र हुए।

प्रथम सत्र : प्रशिक्षण सत्र का विधिवत उद्घाटन व उन्मूखीकरण
समय : 10:30 बजे से 12:00 बजे तक
प्रशिक्षक : स्वामी अग्निवेश जी

उपभोक्तावादी संस्कृति के आधुनिक समय में शहरी शोरगुल और प्रदुषण से दूर प्राकृतिक व नैसर्गिक परिवेश में स्थपित अग्नियोग आश्रम का शांत परिवेश, आसपास के पेड़ों की झुरमुट, पत्तियों से छनकर आ रही झीनी–झीनी प्यारी धूप, पक्षियों की लयबद्ध चहचहाहट के बीच में आध्यात्मिक गुरू के सानिध्य में पुरातन गुरूकुल व्यवस्था में सीखने का यह अवसर कई प्रतिभागियों के लिए मनोहारी था। प्रातः जल्दी उठकर पानी गर्म करने में सहयोग करना, सुबह–सुबह स्नान करना, योग, प्राणायाम, ध्यान, यज्ञ, प्राकृतिक पद्धति से तैयार भोजन और आध्यात्मिक ज्ञान का समन्वय व्यक्तित्व को परिष्कृत करने की आदर्श स्थिति उपलब्ध कराती हैं। सभी प्रतिभागी इस प्रक्रिया में एक–दूसरे का सहयोग करने के लिए तत्पर दिख रहे थे।

धर्म–प्रतिष्ठान, वसुधैव कुटुम्बकम, क्रियात्मक आध्यात्म, School of Applied Spirituality अग्नियोग आश्रम एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के लक्ष्य, उद्देश्य, और वर्तमान परिवेश में प्रासंगिकता को केन्द्र में रखकर नियोजित पहले तकनीकी सत्र में स्वामी अग्निवेश जी ने प्रतिभागियों को समसामयिक वैश्विक समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाते हुए भावी भविष्य की चूनौतियों के लिए सतर्क और तैयार रहने की आवश्यकता समझाया।

स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि, ''मानवीय मूल्यों का विकास करके ही मानव मानवीय सभ्यता और पृथ्वी पर जीवन के सतत विकास को सुनिश्चित कर सकता है। अन्य सभी प्रजाति के पौधे और जन्तु अपनी आवश्यकता अनुसार ही प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करते हैं। वे संचय नहीं करते। किन्तु, मानव में संचय करने की प्रवृति होती है, वह अपनी प्रवृति के अनुरूप ही व्यवहार करके प्रकृति के अधिकतम संसाधनों का मनमाना दोहन करता रहा है। इसके परिणामस्वरूप पृथ्वी का प्राकृतिक संतुलन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। आज मानवजाति के साथ–साथ पृथ्वी पर उपस्थित सभी प्रजातियों के जीव–जन्तुओं के समक्ष वैश्विक तापवृद्धि (Global Warming) और जलवायु परिवर्तन (Climate Change) के भयावह दुष्परिणाम के रूप में अस्तित्व का संकट मंडरा रहा है। ऐसे में मनुष्यों को ही अपने कुकृत्य, अपने गुनाहों की नैतिक ज़िम्मेदारी लेते हुए सार्थक पहल करना होगा। यह पृथ्वी का दुर्भाग्य ही है कि आज पृथ्वी का संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र और उसके अंतर्गत आनेवाले जीव–जन्तु व प्राकृतिक संसाधनों को मानवों ने मानवीकृत भौगोलिक सीमाओं में बाँट लिया है। इतना ही नहीं, वर्चस्व और नियंत्रण की होड़ में अपना प्राकृतिक जातिगत पहचान (*Homo sapiens*) को भूलकर मनुष्यों ने विश्व के अलग–अलग

हिस्सों में पाए जाने वाले संसाधनों और वातावरण अनुकूल व्यवस्थाओं को ही अपना सांप्रदायिक, मज़हबी पहचान बनाकर विविध धर्म–संप्रदायों में वर्गीकृत करके परस्पर युद्ध करने लगा और एक–दूसरे समूह के मानवों के ही कट्टर दुश्मन बन गए। इसके बाद दानवीय प्रवृत्तियाँ मानवीय गुणों के अपेक्षा मानवों को अधिक लुभाने लगी और वैर–भाव से अपना–पराया की भावना से मानव, मानव के खुन का प्यासा हो गया। धर्म के नाम पर, भौगोलिक सीमा के नाम पर मानवीय सभ्यता हज़ारों वीभत्स युद्ध का साक्षी बना है और मानवता कई बार रक्तरंजित हुई है। यह विनाशलीला इतना पर भी नहीं रूका और मानवीय समाज के नाम पर मनुष्यों को संगठित करने वाले कुछ लालची और महत्वकांक्षी लोगों ने शोषणकारी आर्थिक व्यवस्थाओं को स्थापित करके जातिभेद, लिंगभेद, अमीर–गरीब, सेवक–स्वामी जैसे कई मानवीय सीमाओं में मनुष्यों को मनुष्यों से विभाजित कर दिया। जीवनयापन, शादी, भोजन, प्रजनन यहाँ तक कि एक मानव का दूसरे मानव से परस्पर सामाजिक अंर्तसंबंधों को भी ये महत्वकांक्षी नियोजित करने लगे और मानव मानवीय समाज के रूप में संगठित होकर भी जड़/कृत्रिम मायाजाल में कैद हो गया और मानवीय मूल्य धर्म के ठेकेदारों की दासी बन गई। मानवीय मूल्यों की उत्पत्ति सभी प्रजातियों में नैसर्गिक रूप से होती है। जीवन की प्रवृति ही है प्रेम और करूणा। किन्तु दुर्भाग्यवश मानव समाज अपने बच्चों में इन नैसर्गिक गुणों को पनपने ही नहीं देता है। वह पैदा होते ही अपने बच्चों को सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था की जकड़ी हुई बेड़ियों में कसकर जकड़ देता है और जातिगत, धार्मिक संस्कारों की जंज़ीरों, सामाजिक–धार्मिक मान्यताओं के नाम पर मासूम पर अनगिनत बंधनों को लाद देता है। यदि माता–पिता अपने बच्चों से साहिष्णुता का व्यवहार करेंगे और उन्हें भरपूर अवसर देंगे कि वे अपने जीवन के नैसर्गिक मानवीय मूल्यों का साक्षात्कार कर सके तो हम अपने भावी पीढ़ी से यह आशा कर सकेंगे कि **एक विश्व परिवार : वसुधैव कुटुम्बकम्** की आदर्श सामाजिक स्थिति स्थापित होगा और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की विचारधारा पर आधारित जीवनशैली को अपनाने वाले मानवीय समाज की स्थापना हो सकेगी। एक ऐसा समाज जो **सतत विकास** की ओर प्रगतिशील हो।

स्वामी जी ने बताया कि, 15 से 20 दिसम्बर 2016 के दौरान आयोजित होनेवाले इस *पाँच दिवसीय आवासीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण शिविर* का आयोजन आप सभी **देवदूतों (Agents of Transformations)** के लिए किया गया है ताकि नेतृत्व के गुणों को विकसित करके आप **सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्राप्ति हेतु अपने जीवन में क्रियात्मक आध्यात्म** के सिद्धांतों का अनुशरण करें और सत्य, प्रेम, करूणा व न्याय पर आधारित मानवीय समाज का निर्माण करें। **अग्नियोग आश्रम (School of Applied Spirituality)** की स्थापना **"धर्म प्रतिष्ठान"** के तत्वावधान में **"वसुधैव कुटुम्बकम (The World is a Family)** के वैश्विक मानवीय सिद्धांत पर आधारित आध्यात्मिक क्रांति के लिए किया गया है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का लक्ष्य है कि, आपके व्यक्तित्व का सामाजिक–सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूपांतरण हो, आपकी कार्यक्षमता में वृद्धि हो और आपका कार्यप्रदर्शन उत्कृष्ट हो जाए। आप समुदाय में शैक्षणिक, सामाजिक, प्रशासनिक, राजनैतिक, व्यवसायिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूपांतरण के वाहक बन सकें ताकि अपने सार्थक पहल द्वारा आप सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग कर सकें।

तत्पश्चात, प्रशिक्षण शिविर का परिचय के लिए दूसरे तकनीकी सत्र का आयोजन प्रशिक्षण कक्ष में किया गया। प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम की विधिवत जानकारी दी गई।

द्वितीय सत्र : प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय
समय : 12:00 बजे से 1:00 बजे तक
प्रशिक्षक : चन्दन कुमार मिश्र, प्रबंधन सलाहकार, धर्म प्रतिष्ठान

इस सत्र का उद्देश्य था कि,

- प्रतिभागियों को एक समूह में जोड़ा जा सके।
- उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषयवस्तु और प्रशिक्षकों के बारे में जानकारी दी जा सके।

सत्र संपादन के चरण :

1. सर्वप्रथम प्रतिभागियों से यह पूछा गया कि, **"आप इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से क्या सीखना चाहते हैं?"** प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया को चार्ट पेपर पर लिख लिया गया। (बॉक्स : 2) इस अभ्यास से प्रतिभागियों की अभिरूचि पूरे प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान बनी रहती है। सभी की अपेक्षाएँ बहुत हद तक प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। प्रतिभागी प्रशिक्षण से जुड़ाव महसूस करते हैं।
2. प्रतिभागियों को यह आश्वस्त किया गया कि, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से उनकी जो भी अपेक्षाऐं हैं वे काफी हद तक पूरी होंगी।
3. प्रतिभागियों की अपेक्षाओं को स्वामी अग्निवेश जी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। आगामी सत्रों में स्वामी जी के माध्यम से इन अपेक्षाओं को पूरा किया गया।

प्रतिभागियों की इस प्रशिक्षण से अपेक्षा

बॉक्स : 2

प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण से सीखने की अपेक्षा बताते हुए बताया कि वे इन विषयों के बारे में जानकारी चाहते हैं :–

- जीवन को कैसे खुशी से जिया जाए?
- गुस्सा पर कैसे काबु पाऐं?
- अन्याय के खिलाफ गुस्से को कैसे कंट्रोल करें?
- संस्था कैसे समाज में लगातार योगदान दे?
- यहाँ से जाने के बाद कैसे काम सुचारू रूप से चलता रहे?
- धर्म प्रतिष्ठान के अनुसार धर्म कैसे प्रतिष्ठित हो?
- कैसे कैरियर के साथ काम करते रहें?
- वसुधैव कुटुम्बकम कैसे पूर्ण हो?
- सभ्य बनना – सभ्य बनाना।
- समाज में समानता पर कार्य करें।
- मानवतावादी जीवन कैसे जीयें?
- एकाग्रता कैसे हो?
- आर्यसमाज को कैसे आगे बढ़ावें?
- मानवता और इंसानियत को कैसे आगे बढ़ावें?
- समूह में रहकर कैसे मानवतावाद को आगे बढ़ावें?
- दुख–दर्द में काम आना।
- मानव समाज को बेहतर बनाने में हमारी भूमिका
- समता समाज को बेहतर बनाने में तीव्रता से कैसे आगे आवें?
- बंटवारे और असमानता को कैसे खत्म करें?
- भाईचारे की भावना को कैसे बढ़ावें?
- महिलाओं को शिक्षा मे कैसे आगे बढ़ावें?
- महिलाओं की भागेदारी को बढ़ाना।
- शिविर की बातों को क्रियात्मक रूप में कैसे लावें?

4. अब **प्रशिक्षण कार्यक्रम की भूमिका, पृष्ठभूमि, लक्ष्य और उद्देश्यों** के बारे में प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रतिभागियों को बताया गया। इसके साथ ही सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कीट उपलब्ध कराया गया। इस गतिविधि से प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाते हैं और वे सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
5. प्रतिभागियों को प्रमुख **प्रशिक्षकों के जीवनवृत** की जानकारी दी गई। इस अभ्यास से वे प्रत्येक प्रशिक्षक के प्रति सम्मानपूर्वक आस्था रखते हैं और प्रशिक्षण सत्रों से ज्यादा–से ज्यादा सीखने की कोशिश करते हैं।
6. तत्पश्चात विगत दिन के प्रशिक्षण सत्रों और सुबह से हुए सत्रों के बारे में पुनरावलोकन करते हुए समापन किया गया। सत्र का सारांश स्पष्ट करते हुए इसका समापन किया गया और प्रतिभागी मध्याह्न भोजन के लिए एकत्रित हुए।

(भोजनावकाश : 1:00 बजे से 2:00 बजे)

तृतीय सत्र : प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय
समय : 2:00 बजे से 4:00 बजे तक
प्रशिक्षक : अगस्टीन जे वैलिथ, संवाद विशेषज्ञ,

इस सत्र का उद्देश्य था कि,

- प्रतिभागियों को सतत विकास लक्ष्य 2030 के बारे में जानकारी दी जाए।

- प्रतिभागियों को समझाना कि सतत विकास लक्ष्य स्थानीय समूदाय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं।
- प्रतिभागियों को सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति में अपनी भूमिका तय करने में मदद करना।
- प्रतिभागियों को विभिन्न सतत विकास लक्ष्यो के बारे में उन्मूख करना और जानकारी प्रदान करना ताकि वे इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपनी भूमिका निभा सकें।

सत्र के चरणः

1. सर्वप्रथम सभी प्रतिभागियों ने श्री अगस्टीन जे. वैलिथ का स्वागत किया।
2. तत्पश्चात श्री अगस्टीन जे. वैलिथ ने सहभागी प्रशिक्षण विधि का प्रयोग करते हुए प्रतिभागियों को **सतत विकास लक्ष्य 2030** के बारे में क्रमबद्ध जानकारी दी।

श्री अगस्टीन जे वैलिथ को संचार रणनीतिज्ञ, सामाजिक संगठनकर्त्ता, लेखक, प्रकाशक और संचार प्रशिक्षक के रूप में 43 वर्ष का लंबा अनुभव है। इन्होंने यूनिसेफ के साथ भारत के कई पिछड़े राज्यों में 23 वर्ष तक संचार विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवा दी है। ये भारत सरकार के मीडिया सलाहकार के रूप में भी काम कर चुके हैं। ये बाल अधिकार के हिमायती हैं। इन्होंने बाल अधिकारों के कई राष्ट्रीय अभियानों में भी अपना योगदान दिया है। वर्तमान में ये एशियन सेन्टर फॉर इंटरटेनमेन्ट एजुकेशन के संस्थापक निदेशक के रूप में सृजनशील समुदाय (फिल्म, टीवी, रेडियो, फोल्क) को वर्तमान की प्राथमिकताओं से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। ये न्यु मिलेनियम लिसनर्स इंस्टीच्युट और ग्लोबल नेटवर्क ऑफ कन्युनिटी कॉलेज के भी संस्थापक निदेशक हैं। इन्होंने लंदन युनिवर्सिटी इंस्टीच्युट ऑफ एजुकेशन से दूरस्थ शिक्षण–प्रशिक्षण संसाधनों के उत्पादन के साथ–ही साथ कैलिफोर्निया के फिल्डिंग युनिवर्सिटी से वर्ल्ड कैफे प्रोसेसेज़ में परास्नातक किया है। इन्होंने पत्रकारिता और जन संचार (Journalism and Mass Communication) में परास्नातक डिप्लोमा किया है। ये दर्शनशास्त्र से स्नातक रहे हैं।

अपने 42 वर्ष के कार्यकाल के दौरान इन्होंने संचार, पक्ष–प्रतिवादन (Advocacy), मीडिया रिलेशन, और संसाधनों की व्यवस्था से संबंधित परिणाम केन्द्रित कई परियोजनाओं का प्रबंधन किया है। इन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ, सार्वजनिक, निजी, गैर–लाभकारी व मीडिया क्षेत्र के संस्थानों के साथ काम करने का वृहत्त अनुभव रहा है।

बच्चों के नेतृत्व में गहरी आस्था रखनेवाले श्री अगस्टीन जे वैलिथ ने हज़ारों बच्चों को नवाचारी विधियों द्वारा बाल अधिकारों का संरक्षण और बाल भागेदारी को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया है।

श्री अगस्टीन ने **सतत विकास लक्ष्य 2030** की जानकारी देते हुए बताया कि, **सतत विकास लक्ष्य 2030** वर्ष 2030 तक, गरीबी के सभी आयामों को समाप्त करने के लिए, एक साहसिक और सार्वभौमिक समझौता है जो सबके लिए एक समान, न्यायपूर्ण ओर सुरक्षित विश्व की सृष्टि करेगा; ऐसा विश्व जिसमें व्यक्तियों और पृथ्वी की सच्ची समृद्धि हो सके।

सितम्बर 2015 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र महासभा के ऐतिहासिक शिखर सम्मेलन में 193 सदस्य राष्ट्रों द्वारा सतत विकास लक्ष्य 2030 को अपनाया गया था जो 1 जनवरी 2016 को प्रभाव में आया। प्रतिभागियों को समझाते हुए श्री अगस्टीन ने बताया कि, **सतत विकास लक्ष्य 2030 को दुनिया भर के राष्ट्रीय सरकारों और लाखों नागरिकों के साथ अभूतपूर्व परामर्श प्रक्रिया के आधार पर विकसित किए गए हैं।** सतत विकास लक्ष्य 2030 के 17 लक्ष्यों को युएनडीपी के अनुसार **(5P – Planet, People, Prosprity, Peace and Partnership)** को केन्द्र में रखकर बनाया गया है। अर्थात,

Planet – प्लेनेट अर्थात हमारा ग्रह पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों और जलवायु की भावी पीढ़ियों के लिए रक्षा करना।

People – पीपुल अर्थात सभी रूप के गरीबी और भूख को समाप्त करना और सब लोगों के लिए गौरवपूर्ण व समानतापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना।

Prosparity – प्रोस्पैरिटी अर्थात प्रकृति के साथ तारतम्य स्थापित करनेवाले समृद्ध व संतुष्ट जीवन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

Peace – पीस अर्थात शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण व समावेशी समाज का निर्माण करना।

Partnership – पार्टनरशीप अर्थात सशक्त वैश्विक साझेदारी के माध्यम से सतत विकास लक्ष्य 2030 के ऐजेन्डा को लागू करना।

सतत विकास लक्ष्य 2030 के बारे में जानकारी देते हुए श्री अगस्टीन जे वैलिथ ने बताया कि, इसके प्रमुख 17 लक्ष्य निम्नलिखित हैंः–

1. सब जगह से गरीबी का इसके सभी रूपों में अंत करना।
2. भुखमरी समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा और बेहत्तर पोषण हासिल करना तथा सतत कृषि को बढ़ावा देना।
3. स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन तंदुरूस्ती को बढ़ावा देना।
4. समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन शिक्षा–प्राप्ति के अवसरों को बढ़ावा देना।

5. लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और बालिकाओं का सशक्तिकरण करना।
6. सभी के लिए जल और स्वच्छता की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
7. सभी के लिए सतत, समावेशी और संधारणीय आर्थिक विकास, पूर्ण और लाभकारी रोजगार और उचित कार्य को बढ़ावा देना।
8. समुत्थानशील अवसंरचना का निर्माण करना, समावेशी और संधारणीय औद्योगिकरण को बढ़ावा देना और नवोन्मेष को प्रोत्साहित करना।
9. राष्ट्रों के अंदर और उनके बीच असमानता को कम करना।
10. शहरों और मानवीय बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, समुत्थानशील और संधारणीय बनाना।
11. सतत उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करना।
12. जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तात्कालिक कार्रवाई करना।
13. जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्कालिक कार्रवाई करना।
14. सतत विकास के लिए महासागरों, समुन्द्रों और समुद्रीय संसाधनों का संरक्षण करना और इसके संधारणीय तरीके से उपभोग करना।
15. स्थलीय परिस्थितिक–तंत्रों का संरक्षण और पुनरूद्धार करना और इनके सतत उपयोग को बढ़ावा देना, वनों का सतत तरीके से प्रबंधन करना, मरूस्थल–रोधी उपाय करना, भूमि अवक्रमण को रोकना और प्रतिवर्तित करना और जैव विविधता की हानि को रोकना।
16. सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी सोसाइटियों को बढ़ावा देना, सभी को न्याय उपलब्ध कराना तथा सभी स्तरों पर कारगर, जवाबदेह और समावेशी संस्थाओं का निर्माण करना।
17. कार्यान्यवन के उपायों का सुदृढ़ीकरण करना और सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी का पुनरूद्धार करना।

तत्पश्चात, श्री अगस्टीन जी ने प्रतिभागियों को अग्नियोग आश्रम की ऐतिहासिक विशेषता बताते हुए कहा कि, दशकों पहले इसी आश्रम से स्वामी अग्निवेश जी के मार्गदर्शन में बंधुआ मज़दूरों को मुक्त कराने के आंदोलन का आगाज़ हुआ था। हम आज प्रकृति की गोद में बैठकर सतत विकास लक्ष्य 2030 के संदर्भ में विचार–विमर्श कर रहे हैं। आध्यात्मिकता के व्यवहारिक पक्ष पर ध्यान देते हुए, स्वामी दयानन्द के मार्गदर्शन में पुष्पित–पल्लवित आर्य समाज की विचारधाराओं को स्वामी अग्निवेश के सानिध्य में अपने जीवन में उतारने कें संकल्प के साथ एकसाथ जुड़े आप सभी कार्यकर्त्ताओं में देवदूत बनने की भरपूर संभावनाऐं हैं। जैसा कि आपने समझा कि, **सतत विकास लक्ष्य 2030** किसी अमीर के हितों को ध्यान में रखकर नहीं बल्कि हमारी धरती माता को केन्द्र में रखकर निर्धारित किया गया है। अतः हमें अपने जीवनशैली में आवश्यक सुधार करना चाहिए और साथ–ही साथ अपने समाज में सक्रिय भूमिका निभाते हुए सकारात्मक रूप से समाज के अन्य सदस्यों को भी इसके लिए तैयार करना चाहिए। सभी प्रतिभागियों ने इनकी विचारों से सहमति जताई। तत्पश्चात चाय के लिए अल्पावकाश दिया गया। इसके बाद प्रतिभागियों को **संयुक्त राष्ट्र, और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों** की सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्रासंगिकता के संदर्भ में स्वामी अग्निवेश जी ने बताया।

चित्र : सुरेश कुमार सिसोदिया, मीरा, रोहतास, विपीन आर्य, रविकान्त, हंसराज भारतीय, कल्याण सिंह आर्य, मंजीत कुमार, अगस्टीन जे वैलिथ, धीरज कुमार, आदित्य, आर्य पवन पागल, सुरजमल, दर्शन शास्त्री, एवं राजा चौधरी

चतुर्थ सत्र : सतत विकास लक्ष्य 2030 में संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं अंतर्राष्ट्रीय निकायों की भूमिका
समय : 4:30 बजे से 6:30 बजे तक
प्रशिक्षक : स्वामी अग्निवेश

इस सत्र का उद्देश्य था कि,

- प्रतिभागियों को संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्यशैली के बारे में जानकारी दी जाए।
- सतत विकास लक्ष्य 2030 को प्राप्त करने में संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की भूमिका के बारे में जानकारी दी जाए।

सत्र के चरण

- सर्वप्रथम स्वामी अग्निवेश जी ने प्रतिभागियों को अपने विभिन्न अंतराष्ट्रीय सेमिनारों के संदर्भ में अनुभवों को बताया।
- इन्होंने प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर दिए।

स्वामी जी ने वर्ल्ड फुड ऑर्गेनाइजेशन के सेमिनार से संबंधित अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि, उक्त सेमिनार में पोप फ्रांसिस भी शामिल हुए थे। स्वामी अग्निवेश जी ने विश्वभर में भोजन की बर्बादी के संदर्भ में जानकारी देते हुए भूखमरी की स्थिति के बारे में चर्चा किया। इन्होंने बताया कि, विश्व में पूंजीवादी व्यवस्था के दुष्परिणाम के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर गरीबों को कुछ भी अधिकार नहीं रह गया है। दुनिया भर के होटलों में जितने अन्न की बर्बादी होती है यदि उनका समुचित प्रयोग किया जाए तो अनाज का मूल्य भी कम होगा और अधिक लोगों को भोजन भी उपलब्ध हो सकता है। इन्होंने बताया कि यदि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन को रोका जा सके तो लोगों की भोजन और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। इन्होंने बताया कि, ये बात सच है कि, विश्वयुद्धों की दौर से पहले विश्व में एक–दुसरे जगह आनेजाने की काफी हद तक आज़ादी थी। किन्तु राष्ट्र की सुरक्षा के नाम पर बनाए गए भौगोलिक सीमाओं के कारण आज ऐसा संभव नहीं है। पासपोर्ट और वीज़ा के संरचनात्मक बंधनों ने लोगों को विपत्ति के समय में भी अन्य राष्ट्रों में शरण लेने के अवसरों को सीमित कर दिया है। बाढ़, सुनामी, समुन्द्र के बढ़ते जलस्तर, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग के कारण करोड़ों तटवर्ती क्षेत्रों में रहनेवाले लोगों और समुन्द्र से कम ऊँचाई वाले देशों के अस्तित्व पर भी विलुप्ति के संकट का साया मंड़रा रहा है। प्रदुषण की भयावह कालचक्र ने जल, स्थल और वायु को जानलेवा बना दिया है। दिन–प्रतिदिन पादपों और जन्तुओं की प्रजातियाँ लुप्त होती जा रही हैं। चुंकि संयुक्त राष्ट्र संघ के संचालन का अधिकांश खर्च अमीर देशों से दिया जाता है। अतः संयुक्त राष्ट्र संघ भी लोगों के हितों से संबंधित प्रस्तावों को कड़ाई से लागु नहीं करा पाता है। इसके प्रतिबंधों को आए दिन शक्तिशाली राष्ट्र नकारते रहे हैं। जब स्वामी अग्निवेश जी ने भारत में बंधुआ मज़दुरी से संबंधित समस्याओं के बारे में संयुक्त राष्ट्र को अवगत कराया तब भारतीय राजदूत ने उन्हें राष्ट्र की गरिमा का हवाला देते हुए संयुक्त राष्ट्र को समस्याओं से अवगत कराने से रोका था। यहाँ तक कि, संयुक्त राष्ट्र ने भी भारत की संप्रभुता का हवाला देते हुए भारत पर सुधारात्मक पहल करने के लिए किसी भी प्रकार का नैतिक दबाव नहीं बनाया। किसी रिपोर्ट में एक छोटे से कॉलम में कुछ शब्दों में भारत में इस समस्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए उसने अपने हाथ खड़े कर लिए। कई बार संयुक्त राष्ट्र और संबंधित अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को बताने के बावजूद भी वे आज तक भारत से बंधुआ मज़दूरी खत्म नहीं करा सके। आएदिन युद्ध और अन्य राष्ट्रीय हित के मुद्दों का हवाला देते हुए संयुक्त राष्ट्र अमेरीका और चीन जैसे शक्तिशाली देश संयुक्त राष्ट्र संघ के सुझावों को नज़रअंदाज कर देते हैं। उत्तरी कोरिया कई प्रतिबंधों के बावजूद अपने नाभिकीय अस्त्रों के निर्माण से बाज़ नहीं आया। आज आईएसआईएस जैसे आतंकवादी समूह मानवता के अस्तित्व को खुली चुनौती दे रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ अपने संविधान की प्रस्तावना में संकल्पित वैश्विक शांति को स्थापित करने में असफल साबित हुआ है। सतत विकास लक्ष्य 2030 से संबंधित प्रावधानों को लागू करने में शक्तिशाली देश आनाकानी कर रहे हैं। कॉप 21 के बैठक में जो निर्णय लिया गया था उसके अंतर्गत वार्षिक रूप से प्रस्तावित पर्यावरण संरक्षण निधियों को देने और प्रावधानों के लागु करने में संपन्न देश आनाकानी कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र अमेरीका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तो ग्लोबल वार्मिंग के अस्तित्व पर ही सवाल उठा दिया है। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि, संयुक्त राष्ट्र संघ और संबंधित अंतर्राष्ट्रीय संगठन पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइज़ेशन मुक्त व्यापार को बढ़ावा देता है। इससे तकनीकी रूप से पिछड़े भारत और अन्य गरीब देशों के गरीब और कमज़ोर श्रमिकों, किसानों के अस्तित्व पर खतरे का संकट मंडराते रहता है। कुछेक संप्रभु सैन्य राष्ट्र राज्यों के व्यक्तिगत राष्ट्रीय हितों की दबावों से उपर उठकर सभी जनता के हितों में निर्णयों और प्रावधानों को लागु कराने में संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे सक्षम अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए। हमें चाहिए कि, अपने स्तर पर अपने समाज की समस्याओं को दूर करने और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए हम अपना सतत प्रयास करते रहें।

स्वामी जी ने प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए कहा कि, यदि आप ज्ञान प्राप्त करते हैं और मानवता की रक्षा के पथ पर अग्रसर होते हैं तो आपको परेशानियों का डट कर सामना करना पड़ेगा। कुछ अच्छे संगठन हैं जो आपको स्कॉलरशीप और अन्य सुविधाओं के माध्यम से आगे बढ़ने में सहयोग भी करेंगे। जरूरत है तो सिर्फ, अपने धर्म, जाति, परिवार और समाजिक स्तर से उपर उठकर मानवता के स्तर पर सोंचने ओर पहल करने की। तत्पश्चात दिन के तकनीकी सत्रों का समापन हुआ।

रात्री में **पीके** फिल्म का प्रदर्शन किया गया। इसके माध्यम से प्रतिभागियों को बताया गया कि, क्रियात्मक आध्यात्म हमेशा धार्मिक आडंबरों से उपर उठकर मानवता की सेवा करने की प्रेरणा देता है। इस पथ पर अग्रसर होकर बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की संकल्पना को साकार किया जा सकता है। इसके बाद दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

तृतीय दिवस : 17 दिसम्बर 2016

सत्र : योग, प्राणायाम, ध्यान एवं अग्निहोत्र
समय : 7:00 बजे से 9:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य, वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, और समाधि को अष्टांग योग कहा गया है। इन विधाओं को अपने जीवन के अभिन्न अंग के रूप में धारण करनेवाले प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य के मार्गदर्शन में प्रतिभागियों को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए युक्तिपरक परामर्शों के साथ योगाभ्यास का सुअवसर मिला। डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य प्राकृतिक जीवनशैली के आधार पर अपना जीवन जीते हैं। इन्होंने भोजन और शारीरिक शुद्धि के बारे में काव्यात्मक ढ़ंग से सभी प्रतिभागियों को जानकारी दी। योगासनों के माध्यम से शरीर में स्फुर्ति आ गई और चित्त प्रसन्न हो गया। तत्पश्चात वैदिक रीति से **अग्निहोत्र** का अनुष्ठान किया गया। आज के अग्निहोत्र में प्रीति शास्त्री (फुलकिरण) ने यजमान की भूमिका अदा की। विदित है कि वेदों में महिलाओं को भी यज्ञ का अधिकारी माना गया है और उन्हें इस दिव्य सामाजिक अनुष्ठान के माध्यम से सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती थी। इस आयोजन में सभी प्रतिभागियों ने निष्ठापूर्वक अपना योगदान दिया। तत्पश्चात सुबह का नाश्ता करने के बाद हम **मुक्ताकाश प्रशिक्षण** हेतु वृक्षों की ओट में एकत्रित हुए। आज का पहला सत्र **क्रियात्मक आध्यात्म** से संबंधित था।

चित्र : अग्निहोत्र में आचमन के लिए यजमान प्रीति कुमारी को जल देते दर्शन शास्त्री, साथ में सबीता, रोहतास, डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य, विपीन आर्य, चन्दन कुमार मिश्र, स्वामी अग्निवेश, कर्मवीर हान सिंह एवं कल्याण सिंह आर्य

सत्र : क्रियात्मक आध्यात्म
समय : 10:30 बजे से 12:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : स्वामी अग्निवेश

यह सत्र सभी प्रतिभागियों के लिए जीवन का अद्वितीय अवसर था जब उन्होंने अपने जन्मजात धार्मिक, जातिगत, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का समालोचना किया। जन्म के साथ–साथ हमारा धर्म, जाति, आर्थिक और सामाजिक स्थिति निर्धारित हो जाता है। क्या इस व्यवस्था को ईश्वर ने बनाया है? यदि हम सब एक ही ईश्वर के संतान हैं तो हमारे बीच इस प्रकार का भेदभाव क्यों है? क्या भगवान या ईश्वर या अल्लाह हमारे पूर्व जन्मों के आधार पर इस दुनिया में हमारी सामाजिक–आर्थिक स्थिति को निर्धारित करते हैं? इस प्रकार के तीक्ष्ण प्रश्नों के साथ अवचेतन मन की अचेतावस्था को झकझोरते हुए स्वामी जी ने सभी प्रतिभागियों को चैतन्यावस्था में ला दिया।

स्वामी अग्निवेश जी ने बताया कि, विविध धर्मों और पंथों में सत्य, प्रेम, करूणा और न्याय को ईश्वरीय सत्ता का प्रतिमूर्ति और ईश्वर के प्रतिरूप के रूप में महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। जन्म के आधार पर विरासत में मिलनेवाली धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक पहचान हमारे पूर्व की मानव पीढ़ियों द्वारा रची गई शोषणकारी आर्थिक नीतियों का परिणाम है। हर शिशु को बालिग होने से पूर्व तक सभी प्रकार के धर्मपंथ और उनकी मान्यताओं के बारे में धर्मनिरपेक्षता के साथ जानने परखने का अवसर मिलना चाहिए और अपनी समझ के बाद उन्हें अपना धर्म चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। हमें चाहिए कि हम धर्म, जाति, आर्थिक और सामाजिक स्थिति के आधार पर मानव–मानव के बीच होनेवाले भेदभाव से उपर उठकर मानवीय मूल्यों के आधार पर सामाजिक संबंधों का निर्माण करें और उन्हें स्वीकार करें। स्वामी जी ने अपने जीवन का संस्मरण चित्र प्रस्तुत करके सभी प्रतिभागियों को क्रियात्मक आध्यात्म के विभिन्न पहलुओं के बारे में अवगत कराया। स्वामी जी ने बताया कि, इनका जन्म दक्षिण भारत के एक संभ्रान्त ब्राम्हण परिवार में हुआ था। बचपन में महज 4 वर्ष की उम्र में इनके पिताजी का देहावसान होने के बाद ये अपनी माता के साथ अपने नानाजी के घर में रहने लगे। इनके नानाजी अपने राज्य के दिवान थे। वे कट्टर हिन्दु ब्राम्हण थे। बचपन में स्वामी अग्निवेश जी का नाम वेपा श्याम राव था। इन्होंने अपने नानाजी के सानिध्य में वेदों और कर्मकाण्ड का अध्ययन किया और पूरी श्रद्धा से कर्मकाण्डों का अनुशरण करते थे। इन्होंने अपने बचपन का रोचक प्रसंग बताया कि, बचपन में इन्हें भूतों से बहुत डर लगता था। ऐसे में ये हनुमान चालीसा का जोर–जोर से पाठ किया करते थे। इनके छोटे भाई–बहन के बदले भी इन्हें कभी कभी हनुमान चालीसा का कई बार पाठ करना पड़ता था। जब कभी ये स्कूल जाते थे और रास्ते में बिल्ली रास्ता काट जाती थी तो ये वापिस घर आकर भगवान की पूजा करने के बाद ही घर से बाहर निकलते थे। इन्होंने बताया कि, इनके नानाजी के खेत में मज़दूर काम करने आते थे जिन्हें ''**कमुआ**'' कहा जाता था। ये गरीब मज़दूर जब कभी इनके घर आते थे तो एक कोने में दुबक कर खड़े रहते थे। वेपा श्याम राव को जब उनके परिवार वाले इन कमुआ को कुछ कपड़े या भोजन देने को कहते थे तो साथ–ही साथ सख्त निर्देश दिया जाता था कि ये उन्हें स्पर्श नहीं करेंगे अन्यथा ये भी अछुत हो जाऐंगे और इन्हें नहाना पड़ेगा। इन्होंने अपने परिवार में व्याप्त लिंगभेद के आधार पर होनेवाली छुआछुत की भी चर्चा की। बचपन में जब ये अपने स्कूल से घर आते थे तो कुछ समय अपनी माता की गोद में खेलने के बाद बाहर अपने दोस्तों के साथ खेलने जाते थे। किन्तु प्रत्येक माह कुछ दिन इन्हें इनकी माता से नहीं मिलने दिया जाता था। इन्होंने बताया कि, बचपन में इन अनुभवों का इनके मानस पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। इनके बड़े भाई कभी भी अछुत नहीं होते थे किन्तु माता और बड़ी बहन और घर की महिलाओ को प्रायः माह मे कुछ दिन अछुत कहकर उन्हें अलग रखा जाता था। धीरे–धीरे जब ये बड़े हुए तो इन्हें उच्च शिक्षा के लिए कलकता भेजा गया। वहाँ एक बार ये आर्य समाज की सत्संग में गए। सत्संग की बातों ने इन्हें बहुत प्रभावित किया। तत्पश्चात, ये कई बार आर्यसमाजी प्रचारक के संपर्क में आए और इन्होंने धर्म और वेद के बारे में खुब सारे प्रश्न पूछे। इनके प्रश्नों से प्रभावित होकर वे इन्हें संतुष्ट करने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती की रचना **सत्यार्थ प्रकाश** पढ़ने को दिये। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने के बाद इनकी अभिरूचि इस संदर्भ में अधिक जानकारी प्राप्त करने की हुई। बाद में ये कलकता से लॉ और मैनेजमेन्ट की पढ़ाई करने के बाद लॉ के सहायक प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य करने लगे। इनके प्रिय मित्र ने चार्टड एकाउण्टेन्ट की पढ़ाई की थी। एकबार अपने मित्र से मिलने पर उन्होंने वेपा श्याम राव को बताया कि किस प्रकार वे अपने चार्टड एकाउण्टेन्ट की व्यवसायिक कुशलताओं के बल पर अपने मालिक को बहुत लाभ पहुँचाते हैं। उनदिनों बंगाल में वामपंथी आंदोलन जोड़ पकड़ रहा था । आएदिन अखबार पत्रों में विद्यार्थियों और मज़दूर किसानों के शोषण व दमन की खबरें छपती थी। धीरे–धीरे वेपा श्याम राव

के मन में सांसारिक व्यवस्था के प्रति खिन्नता आने लगा और अंततोगत्वा इन्होंने सांसारिक जीवन से सन्यास ले लिया। तब इनका सन्यासी के रूप में **स्वामी अग्निवेश** के रूप में नामांकरण किया गया। तत्पश्चात ये अपने समय के सक्षम सन्यासी **स्वामी इंद्रवेश जी** के साथ मिलकर सामाजिक सुधार के कार्य करने लगे। इन्होंने गरीबी और बंधुआ मज़दूरी की समस्या के लिए जमकर आंदोलन और पदयात्रा किया। बाद में संपूर्ण क्रांति के दौरान ये जयप्रकाश नारायण जी के दिशानिर्देश में सक्रिय राजनीति में कुद पड़े और इन्होंने व्यवस्था परिवर्तन का संकल्प लिया। हरियाणा से चुनाव जीतकर स्वामी अग्निवेश जी शिक्षा मंत्री भी बने । किन्तु नैतिक मुल्यों से समझौता नहीं करने के संकल्प के साथ इन्हें व्यवहारिक राजनैतिक जीवन में अपनी ही पार्टी के नेताओं के षड्यंत्र के कारण इस्तीफा देना पड़ा। स्वामी अग्निवेश जी ने बंधुआ मज़दूरों की मुक्ति के लिए आंदोलन किया और **बंधुआ मुक्ति मोर्चा** का गठन किया। इस मोर्चा के साथ सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के साथ इन्होंने संघर्ष कर लाखों बंधुआ मज़दूरों को मुक्त कराया और सरकारी प्रावधानों के अनुसार उन्हें पूनर्वास का सहयोग दिलाया। स्वामी अग्निवेश जी को **राइट लाइवलीहुड अवार्ड (Alternative Nobel Prize) पुरस्कार** से भी नवाज़ा गया। स्वामी अग्निवेश जी वर्तमान में KAICCID के बोर्ड मेंबर भी हैं। इन्होंने विश्वभर के कई देशों में कई सम्मेलनों के माध्यम से करोड़ों लोगों को सत्य, प्रेम, करूणा और न्याय पर आधारित जीवन जीने की प्रेरणा दी है।

स्वामी जी ने बताया कि, यदि हमारे जन्मजात पहचान हमें मानवता की सेवा करने से रोके तो हमें जरूरत पड़ने पर अपने जन्मजात धर्म के आडंबरकारी रीति–रिवाज़ों और बंधनों की भी तिलांजलि दे देनी चाहिए। किन्तु मानवतावाद पर आधारित जीवनशैली को नहीं त्यागना चाहिए। इन्होंने कहा कि, हमें नशा और मांसाहार का पूरी तरह से त्याग करना चाहिए और जीवमात्र के प्रति दया और प्रेम का भाव रखना चाहिए। स्वामी जी ने बताया कि, आज जरूरत है कि, हम अपने बच्चों को अन्य समुदाय में पले बढ़े बच्चों के साथ भी घुलने–मिलनें दें। आज समाज में अपने परिवार से ही हमें बेटा–बेटी में अंतर नहीं करना होगा। हमें सभी धर्मावलंबियों के प्रति सम्मान का व्यवहार रखना होगा। इससे सामाजिक वातावरण सुरक्षित होगा और परस्पर प्रेम आधारित समाज की रचना होगी। इन्होंने बताया कि समाज के इस जटिल बंधनों को तोड़कर अंतरजातीय, अंतरधार्मिक विवाह करनेवाले जोड़ों को पुरस्कृत करना चाहिए और उन्हें सरकार और समाज की तरफ से संरक्षण मिलना चाहिए। इससे जाति, धर्म का बंधन टुटेगा और समाज में एकता आएगा। हमें कर्मकाण्ड की आडंबरधारी पद्धतियों का तार्किक विश्लेषण करना होगा। इन्होंने बताया कि राज, मठ और सेठ की जुगलबंदी ने समाज को बाँट कर रखा है। हमें इस तिकड़ी के विरूद्ध तार्किक रूप से अपनी आवाज बुलंद करनी होगी और व्यवस्था सुधार की बात करनी होगी ताकि समतामूलक समाज की रचना हो सके। तत्पश्चात प्रतिभागियों ने स्वामी अग्निवेश जी से अपने जीवन से संबधित प्रश्न पूछे।

मध्याह्नभोजनावकाश (1 से 2 बजे तक)

सत्र : नेतृत्व विकास
समय : 02:00 बजे से 4:00 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : आनंद कुमार, भूतपूर्व डीजीपी, भारतीय पुलिस सेवा

प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के विगत दिनों में अबतक अग्निहोत्र के प्रबंधन विज्ञान, समसामयिक विश्व के प्रमुख ज्वलंत समस्याओं, सतत विकास लक्ष्य 2030 और इसे प्राप्त करने में संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका, और क्रियात्मक आध्यात्म की जानकारी प्राप्त कर लिया था। अब आवश्यकता थी उन्हें भावी भविष्य के लिए मानसिक रूप से तैयार करने के लिए ताकि वे प्रशिक्षण के दौरान ही समाज सुधार के कार्य करने के दौरान सामना होनेवाले संभावित व्यक्तिगत, पारिवारिक, और सामाजिक स्तर के प्रतिरोधों और उनसे उपजे विवादों का शांतिपूर्ण निस्तारण करते हुए समाज को नेतृत्व प्रदान करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकें। इस विषय पर जानकारी देने के लिए भूतपूर्व डीजीपी श्री आनंद कुमार एक सक्षम और अनुभवी प्रशिक्षक के रूप में प्रतिभागियों के साथ जुड़े।

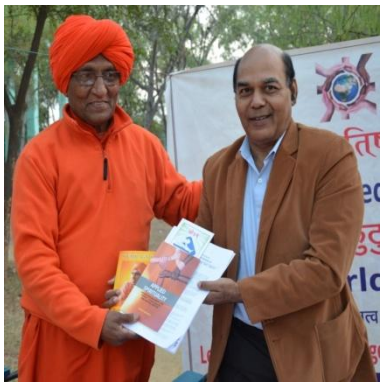

सबसे पहले मैंने (चन्दन कुमार मिश्र) ने श्री आनंद कुमार को विगत दिनों के प्रशिक्षण सत्रों के संदर्भ में संक्षिप्त जानकारी देते हुए प्रतिभागियों का पुनरीक्षण भी कराया और सत्र की भूमिका भी तैयार की। तत्पश्चात श्री आनंद कुमार ने प्रतिभागियों को जानकारी देते हुए बताया कि ''यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आप सभी प्रतिभागी स्वामी अग्निवेश जी के मार्गदर्शन क्रियात्मक आध्यात्म की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अग्नियोग के बारे में इन्होंने स्वामी अग्निवेश जी से चर्चा की। इस दौरान प्रतिभागियों को जानकारी हुई कि, अपने आंतरिक मनोविकारों को संकल्प की अग्नि में आहुति देकर चित्त में अज्ञान, अभाव और अन्याय के स्थान पर सत्य, श्री और यश की प्राप्ति का प्रयास करने की सतत प्रक्रिया ही अग्नियोग है। इसके माध्यम से आत्मशुद्धि करके मानव महामानव बन सकता है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। श्री आनंद कुमार ने बताया कि ''वैश्वीकरण और वसुधैव कुटुम्बकम'' दोनो विचारधाराओं का स्वतंत्र अस्तित्व है। वैश्वीकरण के माध्यम से वसुधैव कुटुम्बकम को स्थापित करने की संभावनाऐं हैं किन्तु सरकारी नीतियों, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रावधानों को अधिक

उदार बनाना होगा ताकि, गरीब देश के कृषकों और मज़दूरों के हितों का भी ध्यान रखा जा सके। इन्होंने कहा कि, आएदिन सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को विवादों का सामना करना पड़ता है। संगठन बनाने, इसे चलाने और लोगों को साथ जोड़े रखने के लिए व्यक्ति में नेतृत्व का गुण होना चाहिए। नैतिक मानदण्डों के आधार पर आचरण, उद्देश्य की शुद्धता, अनुशासित अंर्तवैयक्तिक संबंधों, शुद्ध और परिष्कृत संवाद कौशल एवं संगठन के सदस्यों के मंतव्यों का आदर करके ही उनकी सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है। लोगों की व्यक्तिगत विचारों को उस हद तक स्वीकार किया जा सकता है या नज़रअंदाज किया जा सकता है जिससे संस्थागत लक्ष्य और उद्देश्यों पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े। यथासंभव कोशिश करनी चाहिए कि, नैतिक प्रेरणा, और चर्चा–परिचर्चा के माध्यम से ही संगठन के विवादों का निपटारा किया जाए। इससे संस्थागत व्यवहार सकारात्मक बनाए रखने में मदद मिलती है और संगठन के सदस्यों का परस्पर आत्मिक व्यवहार भी बना रहता है। तत्पश्चात चाय अवकाश के लिए सत्र का अल्पविश्राम किया गया।

चित्र : कर्मवीर हान सिंह, स्वामी अग्निवेश, डीजीपी आनंद कुमार, डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य। साथ में साहिल कुमार, सुखवीर सिंह, आर्य पवन पागल, सुनील कुमार, महेश सायता, विपीन आर्य, कल्याण सिंह आर्य, प्रवीण अत्री, रोहतास, प्रीति कुमारी, मीरा कुमारी एवं भीम बग।

सत्र : आत्म–निरीक्षण एवं ध्यान

समय : 04:30 बजे से 6:30 बजे तक

संसाधन व्यक्ति : प्रवेश आर्या एवं पुनम आर्या, महिला सामाजिक कार्यकर्त्ता

''परमात्मा ने हमें जीवन दिया है। यदि हमें कोई कुछ भी मदद करता है तब हम उन्हें धन्यवाद कहते हैं। यदि कोई हमें एक कलम भी देता है तो हम उन्हें धन्यवाद कहते हैं। बस या ट्रेन में कोई बैठने को सीट दे देता है तो उसे धन्यवाद कहते हैं। कोई खाना दे देता है तो उसे हम धन्यवाद कहते हैं। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिसे हम बाद में देनेवाले को वापिस भी लौटा देते हैं। लेकिन उनके प्रति हम हमेशा कृतज्ञ बने रहते हैं। किन्तु ईश्वर नें हमें धरती, जल, वायु, अग्नि और आकाश दिया है। उन्होंने हमें जीवन दिया है। क्या हम पाँच मिनट भी अपना श्वांस रोककर जिन्दा रह सकते हैं? ये श्वांस हमें किसने दी है? क्या हमें इनके लिए ईश्वर का शुक्रिया नहीं कहना चाहिए? यदि हम किसी को धन्यवाद देना चाहते हैं तो हम अपने दोस्तों से भी कहते हैं कि उन्होंने (नाम लेकर) हमें समय पर मदद किया, वे बहुत अच्छे आदमी हैं वगैरह–वगैरह। क्या हमें ईश्वर को याद नहीं करना चाहिए? दुनिया में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। आध्यात्मिक अभ्यासों के माध्यम से और वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर भी आज विश्व के लगभग सारे लोग इस ब्रह्माण्ड की थाह नहीं लगा पाए हैं। जहाँ विज्ञान की सीमा आध्यात्म से प्रारंभ होकर आध्यात्म तक आकर रूक जाती हैं। हमें अपनी हर श्वांस के साथ ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। ईश्वर ने सभी प्राणियों को एकसमान बनाया है। हमें सबके अस्तित्व का सम्मान करना चाहिए। ईश्वर का नाम हम हमेशा नहीं जपते रह सकते हैं। ईश्वर की पूजा का सबसे अच्छा उदाहरण आप

इस प्रकार समझ सकते हैं। यदि आप किसी व्यक्ति के बेटे या बेटी की कोई मदद करते हैं तब वह इंसान आपको क्या कहता है? धन्यवाद! इसी प्रकार यदि आप ईश्वर के संतानों की सेवा करेंगे, जरूरतमंद की मदद करेंगे तो वह समझेगा कि उसकी मदद करने के लिए ईश्वर ने आपको भेजा है। वह आपको तो धन्यवाद कहेगा ही साथ–ही साथ ईश्वर का भी धन्यवाद कहेगा। इस प्रकार से सभी प्राणियों और पौधों का जीवन उत्सवमय हो जाएगा। यह सच्ची पूजा है। मानवता के सिद्धांतों पर जीवन जीना और मानवीय मूल्यों को अपने आचरण में धारण करना सच्ची पूजा उपासना है। हमें इस प्रकार से अपना जीवन बिताना चाहिए। विश्व इतिहास ने उन सभी लोगों का नाम अपने आँचल में श्रद्धा के साथ उकेर लिया है जिन्होंने अपना तन–मन और धन लोगों की सेवा में, लोगों का जीवन अच्छा बनाने के लिए लगा दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने धर्म, जाति, आर्थिक–साामाजिक स्थिति से ऊपर उठकर पूरे विश्व को विश्व–बंधुत्व की प्रेमासिक्त धागे से एक–दुसरे से जोड़ने का आदर्श प्रस्तुत किया। इन्होंने आर्य समाज के माध्यम से समाज के दबे–कुचले और वंचितों को धार्मिक अधिकार उपलब्ध कराने का आदर्श प्रस्तुत किया। इनके विचारों को सभी धर्म, जाति, संप्रदाय में उत्पन्न बौद्धिक लोगों ने स्वीकारा। हमें चाहिए कि अपने धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति का अभिमान त्यागकर सभी लोगों को अपनत्व की भावना के साथ गले लगाऐं और उनके जीवन को सफल बनाने में, समृद्ध बनाने में अपना यथाशक्ति योगदान दें'' और भी कई महत्वपूर्ण और आदर्शमूलक विचारों को भावपूर्ण बताते हुए बहन पुनम आर्या ने सभी प्रतिभागियों को आत्म–मुल्यांकन करने का अद्वितीय अवसर उपलब्ध कराया। इनके मार्गदर्शन में निष्पादित इस सत्र के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को शांति की अनुभूति हुई और बौद्धिक एवं भावनात्मक स्तर पर अपना आत्म'–निरीक्षण करने का अवसर मिला। इसके बाद सभी प्रतिभागियों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती का गीतमय जीवनी देखा। इस प्रकार सत्र का समापन हुआ। अल्पावकाश के बाद प्रतिभागियों ने मिलकर ''ओमाईगॉड बालीवुड फिचर फिल्म'' देखा और इसके बाद चर्चा के साथ दिवस के प्रशिक्षण सत्र का समापन हुआ।

चतुर्थ दिवस : 18 दिसम्बर 2016

सत्र : योग, प्राणायाम, ध्यान एवं अग्निहोत्र
समय : 7:00 बजे से 9:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य, बहन प्रवेश आर्या, एवं बहन पुनम आर्या

सर्वप्रथम डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य के मार्गदर्शन में सभी प्रतिभागियों ने प्राकृतिक चिकित्सा के विविध आयामों की जानकारी प्राप्त की। डॉ. आर्य ने प्रतिभागियों को आहार, व्यायाम एवं संयमित जीवन की रहस्यपूर्ण किन्तु महत्वपूर्ण जानकारी को सरल और सहज भाषा में सबको समझाया। इन्होंने योगाभ्यास और प्राणायाम के साथ–साथ बताया कि हमें अपने भोजन में कच्चा अनाज का भी अधिक से अधिक सेवन करना चाहिए। इससे हमारी जठराग्नि प्रज्ज्वलित रहती है और शरीर में ऊर्जा का संचार होता रहता है। इन्होंने सभी प्रतिभागियों को पर्याप्त जल पीने को कहा। इन्होंने बताया कि पेट साफ रखने पर कई प्रकार की बीमारियों को दूर भगाया जा सकता है।
तत्पश्चात अग्निहोत्र की व्यवस्था की गई। आज के हवन के लिए बहन पुनम आर्या एवं प्रवेश आर्या संयुक्तरूप से ब्रह्मा के रूप में, यजमान के रूप में चन्दन कुमार मिश्र, होता के रूप में प्रीति कुमार (फुलकिरण), अध्वर्यु के रूप में कुमारी रीमा आर्या और उद्गाता के रूप में कुमारी पुजा आर्या ने अपनी भूमिका निभाई।

चित्र : अनिहोत्र में ब्रह्मा के रू‍प में बहन पूनम आर्य, प्रवीण आर्य, डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य, चन्दन कुमार मिश्र, साहिल कंमार, स्वामी अग्निवेश, दर्शन शास्त्री, कल्याण सिंह आर्य, रोहतास, आदित्य, प्रीति कुमारी, मीरा, रीमा आर्य, पूजा आर्य, सबीता एवं बहन प्रवेश आर्य।

वैदिक रीति से हवन के उपरांत स्वामी अग्निवेश जी ने विस्तार से **अग्निहोत्र के प्रबंधन विज्ञान** की जानकारी दी। इन्होंने संगठन का बेहतर प्रबंधन और संचालन के लिए संगठित रूप से काम करने की आवश्यकता को समझाया। स्वामी अग्निवेश जी ने विस्तार से सबकी भूमिका स्पष्ट की। इन्होंने बताया कि, ''ब्रह्मा (Head of the Organization) किसी कार्य को निष्पादित करने का विचार करता है और उसका लक्ष्य एवं उद्देश्य स्पष्ट करता है। यजमान (Chief Executive), ब्रह्मा के विचार को क्रियान्यवित करने का संकल्प करता है और अपने संपूर्ण चैतन्य के साथ उसे पूर्ण करने के लिए स्वयं को तन, मन, धन से उपलब्ध करता है। संकल्पित लक्ष्य की प्राप्ति करने हेतु उसे होता (Planning) की मदद होती है। होता के साथ मिलकर यजमान ब्रह्मा के दिशा–निदेश में कार्ययोजना तैयार करता है। फिर, कार्य निष्पादन के लिए उसे अध्वर्यु (Operation Executives) के सहयोग की जरूरत होती है। यजमान, ब्रह्मा के निरीक्षण और होता के मार्गदर्शन में अध्वर्यु के रूप में अपने सहयोगियों को अपने साथ संकल्पित कार्य को पूरा करने के लिए जोड़ता है। अब संगठन को पुरी तरह से संचालित करने और इसके सभी सदस्यों में तारतम्य बनाकर रखने के लिए उद्गाता (Management Representatives) की आवश्यकता होती है। यह सभी सहयोगियों के कर्तव्यों और अधिकारों के बीच में सामंजस्य बनाकर, उपलब्ध संसाधनों का उचित प्रयोग सुनिश्चित करते हुए यजमान द्वारा संकल्पित कार्य को पुरा करने में अपना योगदान देता है।'' इस प्रकार सभी प्रतिभागियों ने सारगर्भित और व्यवहारिक रूप से आत्म–प्रबंधन एवं संस्थागत प्रबंधन का गुर सीखा।

सत्र : पुनरीक्षण
समय : 10:30 बजे से 11:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : स्वामी अग्निवेश

विगत दिनों के सत्रों से सीख के बारे में एक–एक कर सभी प्रतिभागियों ने अपने विचार रखे। सभी प्रतिभागियों ने बखुबी विगत दिनों के प्रशिक्षण सत्रों के बारे में जानकारी दी। इस अभ्यास से पुरे प्रशिक्षण का मध्यकालीन समीक्षा संपन्न हुआ। यह सत्र एक महत्वपूर्ण सत्र था। इसमें सभी प्रतिभागियों ने यह समीक्षा किया कि, प्रथम दिवस के ''अपेक्षा सत्र'' के दौरान अभिव्यक्त किए गए सभी अपेक्षाओं के अनुरूप प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान पर्याप्त जानकारी मिल रही थी। इस सत्र के दौरान प्रीती कुमारी ने भगवान की प्रार्थना ''कण–कण में तु बसा है, हर दिल में है समाया...'' सुनाकर सभी प्रतिभागियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस प्रार्थना के शब्द सभी प्रतिभागियों को भगवान के विशाल अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए प्रभावित किया। प्रार्थना के भाव सभी प्रतिभागियों को भगवान द्वारा रचे इस श्रृष्टि की विशालता और इसके प्रचुर संसाधनों के लिए उनका धन्यवादज्ञापन करने के लिए प्रेरित कर रहा था। इस प्रार्थना के लिए स्वामी अग्निवेश जी ने प्रीति कुमारी को बधाई दिया।

सत्र : जैविक कृषि
समय : 11:30 बजे से 1:00 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : डॉ. अंजनी कुमार सिंह, परियोजना समन्यवक, कृषि विज्ञान केन्द्र, गुरूगाँव, हरियाणा

डॉ. अंजनी कुमार सिंह ने प्रतिभागियों को जैविक कृषि की व्यवहारिक विधियों के बारे में विधिवत जानकारी दी। इन्होंने प्रतिभागियों को सरकारी योजनाओं के बारे में भी बताया। यह सत्र प्रतिभागियों के लिए महत्वपूर्ण था। क्योंकि, सभी प्रतिभागियों ने यह जाना कि, अपने अपने कार्यक्षेत्र में वे किस प्रकार लोगों को कृषि आधारित आर्थिक विकास के कार्यों में लगा सकते हैं। तत्पश्चात दोपहर के भोजन के लिए अवकाश हुआ।

चित्रः डॉ. अंजनी कुमार सिंह, स्वामी अग्निवेश, डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य एवं बहल्पा के सरपंच

सत्र : विश्व संसद एवं संविधान व एक विश्व परिवार
समय : 02:00 बजे से 06:00 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : स्वामी अग्निवेश, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, डॉ. ग्लेन टी मार्टिन

डॉ. ग्लेन टी मार्टिन, विश्व संसद एवं संविधान संगठन के वैश्विक अध्यक्ष हैं। इन्होंने अपने तकनीकी सत्र के दौरान बताया कि, आज के परिवेश में भी विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में धार्मिक साहिष्णुता को अलग–अलग प्रकार से विवेचित किया जाता है। धर्म का राष्ट्रीय नीतियों पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। एक वैश्विक निकाय की नितांत आवश्यकता है जिसमें राष्ट्रीय सीमाओं से परे उठकर धर्म के सच्चे उपदेशक और विभिन्न पंथों के मानवतावादी विचारों के पक्षप्रतिवादक एकजुट होकर अपनी विचारों को एक पटल पर रख सकें। इस प्रकार की वैश्विक व्यवस्था स्थापित होने पर धार्मिक ग्रन्थो की भ्रमित विवेचना कर लोगों को भ्रमित करनेवाले कुत्सित विचारधारा वाले तथाकथित धार्मिक नेताओं के बुरे मनसूबों पर लगाम लगाई जा सकती है और आनेवाली पीढ़ी को आपसी भाईचारे और प्रेम पर आधारित वैश्विक समाज बनाने में सहयोग मिल सकती है। इस सत्र में डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने प्रतिभागियों को विस्तार से डॉ. ग्लेन टी मार्टिन के विचारों को समझने में मदद किया। तत्पश्चात खुले सत्र के दौरान डॉ. वैदिक ने किसी भी राष्ट्र के विदेश नीति पर राष्ट्र के आर्थिक हितों और अन्यान्य लक्ष्यों को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय नीति निर्माण की समीक्षा करते हुए बताया कि, राष्ट्रीय समुदाय को चाहिए कि अपने लालचपूर्ण राष्ट्रीय हितों की आड़ में किसी अन्य भौगौलिक क्षेत्र के अंतर्गत निवास करनेवाले लोगों के जीवन में परेशानी और दुःख का ज़हर नहीं घोलना चाहिए। इन्होंने राष्ट्र प्रायोजित आतंकवाद और महत्वकांक्षी शोषणकारी आर्थिक नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि, दुर्भावना से प्रेरित होकर किसी अन्य राष्ट्र के निवासियों को मारना, कष्ट पहुँचाना और विभेदकारी रूप से दुःख पहुँचाने की नीति का त्याग करना होगा। वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा पर आधारित विश्व परिवार की परिकल्पना को साकार करना होगा। सभी प्रतिभागियों ने इनके विचारों से सहमति जताई।

चित्र : डॉ. ग्लेन टी मार्टिन के साथ विडियो कॉलिग करते हुए स्वामी अग्निवेश।

तत्पश्चात ''राजनीति में युवाओं की भूमिका'' विषय पर समूह चर्चा करते हुए डॉ. वैदिक और स्वामी अग्निवेश जी ने स्वच्छ चरित्र के युवाओं को राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता पर जोर दिया। स्वामी अग्निवेश जी ने बताया कि आध्यात्मिक जीवन की सार्थकता समाज के दीन–दुखियों और वंचितों के कल्याणार्थ निष्काम रूप से कार्य करने से ही सिद्ध हो सकती है। तत्पश्चात दिवस के सत्र का समापन हुआ।

चित्र : चर्चा के दौरान विचारमग्न स्वामी अग्निवेश एवं संबोधित करते हुए डॉ. वेद प्रताप वैदिक

संध्याकालीन फिल्म प्रदर्शन के दौरान प्रतिभागियों ने ''आप की अदालत में स्वामी अग्निवेश'' कार्यक्रम की रिकार्डिंग देखी। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सभी प्रतिभागियों ने जनजागरूकता के गीत गाए। पत्रकार विपिन आर्य ने स्वामी अग्निवेश जी को एक कविता समर्पित किया। तत्पश्चात रात के भोजन के साथ दिवस के सत्र का समापन हुआ।

कविता

भाग्य जागा हमारा, मिला जब ये संदेश,
हरि की भूमि हरियाणा में, आह्वान कर रहे हैं स्वामी अग्निवेश।
गुरूग्राम भूमि अग्नियोग के आश्रम में, जुट आओ मानवता के हामी,
ऋषि परंपरा के अनुयायी बनकर आगे आये अपने स्वामी अग्निवेश।।
दमकता चेहरा, दिल में सच्चाई, तन पर भगवा वेष।
अब जागो–जागो कर लो तैयारी, है हम आर्यों की बारी
''वसुधैव कुटुम्बकम'' का संदेश फैलाओ, है परिवार अपना ये दुनिया सारी।
अब पुरे विश्व में ''क्रांति'' की कर ली है तैयारी
मिटाकर रहेंगे, धर्म की भ्रांतियाँ सारी।
मन में ठान लिया है करके संकल्प महान,
जीवन देकर आगे बढ़ाऐंगे, धर्म प्रतिष्ठान।

– विपिन आर्य, सहारणपुर (उ०प्र०)

पंचम दिवस : 19 दिसम्बर 2016

सत्र : योग, प्राणायाम, ध्यान एवं अग्निहोत्र
समय : 7:00 बजे से 9:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य, बहन प्रवेश आर्या, एवं बहन पुनम आर्या

सर्वप्रथम डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य के मार्गदर्शन में सभी प्रतिभागियों ने प्राकृतिक चिकित्सा के विविध आयामों की जानकारी प्राप्त की। डॉ. आर्य ने प्रतिभागियों को आहार, व्यायाम एवं संयमित जीवन की रहस्यपूर्ण किन्तु महत्वपूर्ण जानकारी को सरल और सहज भाषा में सबको समझाया। इन्होंने योगाभ्यास और प्राणायाम के साथ–साथ बताया कि हमें अपने भोजन में कच्चा अनाज का भी अधिक से अधिक सेवन करना चाहिए। इससे हमारी जठराग्नि प्रज्ज्वलित रहती है और शरीर में ऊर्जा का संचार होता

रहता है। इन्होंने सभी प्रतिभागियों को पर्याप्त जल पीने को कहा। इन्होंने बताया कि पेट साफ रखने पर कई प्रकार की बीमारियों को दूर भगाया जा सकता है।

तत्पश्चात अग्निहोत्र की व्यवस्था की गई। आज के हवन के लिए डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य ब्रह्मा के रूप में, यजमान के रूप में पुजा आर्या, होता के रूप में रीमा आर्या, अध्वर्यु के रूप में प्रीति कुमारी और उद्गाता के रूप में विपिन आर्य ने अपनी भूमिका निभाई। वैदिक रीति से हवन के उपरांत सभी प्रतिभागियों ने अंकुरज़ का नाश्ता किया। नाश्ता के बाद प्रस्तावित था कि, हम मिलकर **राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाकउल्लाह खान और भारत के वीर–सपुत शहीदों की शहादत को याद करेंगे।**

सत्र : शहीदों को श्रद्धांजलि
समय : 10:30 बजे से 11:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : स्वामी अग्निवेश, अश्फाकउल्लाह खान के प्रपौत्र मोहम्मद अश्फाक एवं अन्य

भारतीय समाज को अन्धविश्वासी रूढ़िवादी विकृत और विभेदकारी सामाजिक–धार्मिक मान्यताओं और शोषणकारी आर्थिक व्यवस्थाओं की स्थापना करके जड़वत्त बनादेनेवाले और समाज के वंचित लोगों लोगों की दयनीय शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक व्यथाओं को पूर्वजन्म के पापकर्मों का फल बताकर उन्हें धर्म और पाखण्ड के नाम पर लुटने और गुमराह करनेवाले पाखण्डी धर्माधिकारियों के स्वघोषित व बहुसंख्यक तानाशाह उत्तराधिकारियों ने समाज के वंचित लोगों अपनी दयनीय परिस्थिति को पीढ़ी–दर–पीढ़ी निष्क्रिय रूप से नियति समझकर स्वीकार करने के लिए सदियों से बाध्य कर रखा था। शताब्दियों तक समतावादी सामाजिक व्यवस्था की विचारधारा के समर्थक क्रांतिकारी सामाजिक–धार्मिक–राजनैतिक नेतृत्वकर्त्ताओं ने इस कुव्यवस्था के साथ जीवनपर्यन्त संघर्ष किया। किन्तु बाहरी आक्रमणकारियों के आक्रमण और आंतरिक विरोधों के विश्वासघात से दोतरफा संघर्ष करने के कारण वर्तमान समय तक भी सामाजिक–धार्मिक–आर्थिक कुव्यवस्था की चूलें थोड़ी बहुत ही हिल सकी हैं। मानवीय सभ्यता के इतिहास में ऐसे इक्के–दुग्गे क्रांतिकारी शहीद ही दिखाई पड़ते हैं। ''क्रांति तो समतामूलक समाज की स्थापना की विचारधारा और सामाजिक क्रियाशीलता की जननी होती है। समय की कोख में पलकर कुछ सपूत ऐसे पैदा होते हैं जो अपनी माँ के दूध का कर्ज उतारने के लिए हँसते हुए अपना सर्वस्व न्योछावर कर सकें। ऐसे सपूत विरले ही पैदा होते हैं जो जाति, धर्म, और राष्ट्रवाद के कृत्रिम बंधन से परे होकर मानवतावाद के सिद्धांत पर आधारित जीवन के अग्निपथ पर चलते हैं और जीवन के हर संघर्ष को सहर्ष स्वीकार करते हैं। ऐसे ही शहीदों में शुमार थे – राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाकउल्लाह खान और राजेन्द्र लाहिड़ी। इनकी शहादत को कुछ लोग उग्रवादी राष्ट्रवाद से जोड़कर देख सकते हैं। लेकिन, समाजवादी विचारधारा से प्रभावित और सर्वहारा वर्ग के शोषण से मर्माहत होकर इन्होंने शशक्त और सत्ताधारी शोषक पूँजीवादी विचारधारा के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों का लालचपूर्ण दोहन करनेवाले और मूल निवासियों के हितों का अतिक्रमण करनेवाले तात्कालिक ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध क्रांति और विद्रोह की आवाज बुलंद की थी। अपना सर्वस्व न्योछावर करके भी दलितों और शोषितों की आवाज को इन्होंने अपनी अंतिम सांस तक पुरी श्रद्धा के साथ जीवित रखा। इन शहीदों की शहादत को याद करने और इनकी शहादत से प्रेरणा लेकर प्रतिभागियों को समाज के दलितों और शोषितों के लिए सेवाभावना से काम करने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। सभी प्रतिभागियों ने संकल्प लिया कि, वे निःस्वार्थ भाव से जनसेवा के कार्य में अपना सर्वस्व न्योछावर करने से भी पीछे नहीं हटेंगे। अश्फाकउल्लाह खान के प्रपौत्र मोहम्मद अश्फाक ने भी मोबाईल के माध्यम से प्रतिभागियों को संबोधित किया।

चित्रः शहीदों को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए स्वामी अग्निवेश

सत्र : वसुधैव कुटुम्बकम
समय : 11:30 बजे से 1:00 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : स्वामी अग्निवेश

स्वामी जी ने बताया कि, यजुर्वेद के 40वें अध्याय के प्रथम श्लोक में वर्णित है कि, ''संसार के सभी तत्व में ईश्वरीय अंश विद्यमान है। हे मनुष्य! अपनी आवश्यकतानुसार ईश्वर प्रदत इन संसाधनों का उपयोग करो ना कि अपनी लालच से वशीभूत होकर।'' वसुधैव कुटुम्बकम का यह सिद्धांत सार्वकालिक सार्वभौमिक एकीकरण का सिद्धांत है। यह सिद्धांत सतत विकास की अवधारणा का पुरातन वैदिक जीवनशैली का अभिन्न अंग रहा है। इसे अमेरिका ने ''मिताकुए ओनाशियन'' के रूप में आत्मसात किया है तो अफ्रिका में इसे ''उबन्तु'' के नाम से बताया गया है। ईसाई धर्म में इसे 'सुनहरा सिद्धांत' के रूप में बताया गया है तो इस्लाम ने इसे 'तौहिद और मुताफिकालिन अर्थात – एकत्व और परस्पर निर्भरता के सिद्धांत' के रूप में बताया है। बौद्ध दर्शन इसे एकत्व के सिद्धांत से बताता है। वैज्ञानिक खोज भी सबके दार्शनिक एवं आध्यात्मिक एकत्व की मान्यता की पुष्टि करता है। समसामयिक वैश्विक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हमें सकारात्मक निर्माणकारी भूमिका निभाते हुए एक विश्व परिवार की मान्यता को मजबुती के साथ अपनाना होगा। इसी सिद्धांत के आधार पर विश्व को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं से उबारा जा सकता है। हमें जीयो और जीने दो के सिद्धांत पर अपना जीवन जीना होगा। हमें परस्पर एकता, निर्भरता एवं सहआस्तित्व के व्यापक समावेशी दृष्टिकोण को अंगीकृत करते हुए साहिष्णुपूर्ण जीवनशैली अपनाना चाहिए। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि, सभी प्राणियों का निर्माता एक ही ईश्वर है। इससे हम आपसी सामंजस्य, जुड़ाव और सहसंबद्धता का अनुभव करेंगे। संसार को सबकी साझी संपत्ति के रूप में स्वीकार करने पर हम इसके संसाधनों पर सबके बराबर अधिकार का समर्थन कर सकेंगे। यह सत्य है और अनवरत चलनेवाली प्रक्रिया है। अपनी चेतना में हमें सहृदयता एवं सहनशीलता को अपनाना होगा और बुद्धिमत्तापूर्वक अपने कार्यों और उसके परिणामों को स्वीकार करना होगा। हमें प्रयत्न करना होगा कि, राजनैतिक, आर्थिक और वैधानिक स्तर पर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय एवं सामाजिक न्याय की स्थापना हो सके। अपने व्यवहार से सभी प्रकार के भेदभावपूर्ण व्यवहार को दूर करना होगा। हमें अपना आध्यात्मिक विकास करके ''मानवता के देवदूत'' के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिए। ताकि हम अपने शब्दों और कर्म के माध्यम से न्याय के आग्रही और सत्य को अपनाने वाले बन सकें। हमें चाहिए कि, हम अपने जीवन के मूल्यों के रूप में उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार, वैश्विक नातेदारी, विविधता का सम्मान एवं स्वीकार्यता, सभी के लिए न्याय एवं स्वतंत्रता, गरीबों एवं पीड़ितों के प्रति सहानुभूति एवं सहयोग को स्वीकार करें और लोकहित के लिए अग्रसर बनें। इन्होंने सभी प्रतिभागियों को बताया कि, 'एक विश्व परिवार' की स्थापना करने के लिए हमें मिलकर कुछ प्रमुख कार्य करने होंगे। जैसे –

1. **एकीकरण एवं परिवर्तन के लिए संवाद मंच की स्थापना :–** अलग–अलग क्षेत्र के प्रतिनिधि, सामाजिक एवं सांस्कृतिक नेतृत्वकर्त्ताओं को एकमंच पर लाकर तात्कालिक समस्याओं का समालोचनात्मक मूल्यांकन करके आपसी सामंजस्य द्वारा समस्या समाधान की रूपरेखा तैयार करनी होगी और इसे क्रियान्यवित करने का प्रयास करना होगा।
2. **बदलाव के लिए देवदूतों को गढ़ना :–** विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक समूहों से नवयुवकों की ऐसी सेना तैयार करनी होगी जो शांतिपूर्ण, सतत एवं समावेशी विकास के लिए अपने समाज में व्यक्तिगत एवं संस्थागत स्तर पर नवोन्मेषी कदम उठा सकें।
3. **आदिवासी युवक सशक्तिकरण :–** आदिवासी युवाओं एवं युवतियों को सक्षम बनाना होगा ताकि वे अपने विविध सांस्कृतिक मूल्यों, आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक परंपराओं और अपनी विशेष सामाजिक, राजनीतिक उम्मीदों को प्रभावपूर्ण तरीके से राष्ट्र की आवाज बना सकें। और अपनी परंपरागत ज्ञान से लोगों को सतत एवं संधारणीय विकास के जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित कर सकें।
4. **सघन विस्तारीकरण हेतु राष्ट्रीय नेटवर्क की स्थापना :–** स्कूलों व कॉलेजों में विद्यार्थी संगठन का निर्माण, एवं प्रशिक्षित देवदूतों व आदिवासी युवा–युवतियों का मंच निर्माण करना होगा ताकि वे परस्पर ज्ञान, सुचना और कार्यक्रमों को एक–दूसरे से साझा करके विकासोपयोगी कार्यों को गति दे सकें।
5. **सक्षम वैश्विक मंच की स्थापना:–** उपरोक्त गतिविधियों को नीतिगत एवं वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराने के लिए विविध संस्कृति के दूरद्रष्टा प्रतिनिधियों का एक ऐसा मंच तैयार करना होगा जो संयुक्त रूप से वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा पर आधारित वैश्विक समाज की स्थापना के लिए परिवर्तन के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करेंगे और संवाद मंच, देवदूतों के प्रशिक्षण, आदिवासी युवा सशक्तिकरण, शैक्षणिक संस्थानों और समुदाय में स्थापित ''शांति मंच'' के गतिविधियों को आर्थिक एवं वित्तीय रूप से सहयोग कर सकें।

सभी प्रतिभागियों ने इस विचारधारा एवं इन कार्यक्रमों के प्रति प्रतिबद्धता दिखाया। प्रतिभागियों के पूछने पर स्वामी जी ने बताया कि, धर्म प्रतिष्ठान के माध्यम से उपरोक्त गतिविधियों को संपादित करने के लिए आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। इस सत्र के बाद भोजनावकाश हुआ। भोजनावकाश के बाद भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ पदाधिकारी भूतपूर्व डीजीपी वीएन राय के साथ भारतीय संविधान के अनुसार सतत विकास लक्ष्य 2030 को प्राप्त करने के प्रावधान पर तकनीकी सत्र का आयोजन किया जाना था।

सत्र : भारतीय संविधान के अनुसार सतत विकास लक्ष्य 2030 को प्राप्त करने के प्रावधान
समय : 02:30 बजे से 4:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : भूतपूर्व डीजीपी वी एन राय

जब सत्ता और सरकारी तंत्र, समाज के कल्याण हेतु कार्य करने में असफल सिद्ध होने लगती है और सत्ताभोगी निरंकुश रूप से सरकारी संसाधनों की लूट–खसुट करने लगते हैं तो समाज के पिछली पंक्ति के लोगों के हितों को बर्बरतापूर्वक नज़रअंदाज किया जाने लगता है। जब राष्ट्रीय नीतियाँ, समाज कल्याण की योजनाएँ, प्रशासनिक तंत्र और न्यायिक प्रणाली जरूरतमंद नागरिक को उसकी नागरिकता की पहचान और संवैधानिक अधिकार उपलब्ध कराने में पंगु सिद्ध होने लगती हैं तब समाज में सरकार विरोधी धरना–प्रदर्शन बढ़ने लगते हैं, चोरी छुपे इनकी आड़ में असामाजिक तत्वों की गतिविधियाँ भी बढ़ने लगती हैं और समाज में उत्पाद, जाति, धर्म और मज़हब के नाम पर होनेवाले विखण्डनकारी ष्डयंत्र एवं विभाजनकारी संघर्ष बढ़ने लगता है। अभाव, अज्ञान और अन्याय की अधिकता होने और प्रभावी सुरक्षा एवं निवारण तंत्र के न होने पर समाज का बुद्धिजीवी वर्ग क्षुभ्ध हो जाता है और इनकी सामाजिक क्रियाशीलता से सरकार एवं शासन के विरूद्ध जनता की आवाज बुलंद होने लगती है। कभी–कभी सत्ता से मदांध पदाधिकारियों द्वारा लोगों की समस्याओं को दूर करने के स्थान पर उनपर विरोध–प्रदर्शन के कारण राष्ट्रविरोधी मुकद्दमें चलाकर और इल्ज़ाम लगाकर तरह–तरह के जुल्म किये जाने लगते हैं। अंर्तसंबद्ध सामाजिक क्रिया–प्रतिक्रिया की यह कड़ी जब अनियंत्रित हो जाती है तब समाज में एक ऐसे वर्ग की उत्पत्ति हो जाती है जो वास्तव में सरकार और समाज विरोधी गतिविधियों में संलग्न हो जाते हैं। जब पीड़ितों को न्याय नहीं मिल पाता तो वे न्यायिक व्यवस्था से खिन्न होकर अपने अनुसार अपने न्याय का पैमाना निर्धारित करके बदले की भावना से प्रेरित होकर हिंसक गतिविधियों को अंज़ाम करने लगते हैं। जब अभाव में इंसान भूख और अन्य जरूरतमंद समस्याओं से जुझते–जुझते हुए हारने लगता है और से किसी प्रकार का सरकारी या सामाजिक सहयोग नहीं मिलता तो उसकी अभिवृत्ति समाज और सरकार के प्रति नकारात्मक हो जाती है और वह असामाजिक एवं आपराधिक गतिविधियों में तल्लीन होने लगता है। जब संवैधानिक प्रावधानों और कानूनी उपबंधों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं होती और सामाजिक एवं सरकारी तंत्र उसकी मूलभूत जरूरतों को पुरा करनेवाले प्रावधानों के बारे में उन्हें जागरूक करने और पर्याप्त मार्गदर्शन उपलब्ध कराने में असफल सिद्ध हो जाता है तब, वे भ्रष्टाचार की खुनी पंजे में फंसने को मज़बूर हो जाते हैं। इन समस्याओं पर विस्तृत चर्चा करने के लिए भूतपूर्व डीजीपी वी एन राय सभी प्रतिभागियों के साथ जुड़े। इन्होंने बखूबी भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, राज्य के नीति–निर्देशक तत्वों, मूल कर्तव्य और कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका से जुड़े प्रावधानों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। इन्होंने बताया कि, संवैधानिक प्रावधानों के तहत धर्म–निरपेक्षता, सामाजिक–आर्थिक–राजनैतिक न्याय, समानता, एवं स्वतंत्रता से संबंधित उपबंध दिये गए हैं। जरूरत है इनके तहत लोकहित के अनुसार लोक नीतियों के निर्माण करने का एवं उनका निष्पक्ष एवं पारदर्शिता के साथ क्रियान्यवन करने का। सरकारी पदाधिकारी के रूप में, राजनैतिक नेता के रूप में, सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में अथवा सिविल सोसायटी के प्रतिनिधियों के रूप में यदि भारतीय संविधान के मूल सिद्धांतों को ध्यान में रखकर पहल की जाए तब सुनिश्चित रूप से समतामूलक समाज का निर्माण हो सकता है और वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना साकार हो सकती है। इन्होंने बताया कि प्रशासनिक पदों पर काम करनेवाले पदाधिकारियों के समक्ष कई बार नैतिक द्वन्द्व की परिस्थितियाँ भी आती हैं जब उन्हें जनता के प्रति समानुभूति के आधार पर निर्णय लेना होता है। भ्रष्ट वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं सत्ताधारी लोगों के निजी हितों से प्रेरित आदेशों को नैतिकता और विधिगत प्रावधानों के उत्कृष्ट समन्यवय के आधार पर मानने से इन्कार भी करना होता है। निःस्वार्थ रूप से अपने पद और अधिकारों का नैतिक प्रयोग करने से वे अपने व्यक्तिगत हितों और समाज के व्यापक हितों की सुरक्षा कर सकते हैं।

चित्र : डीजीपी वी एन आर्य को पुस्तक समर्पित करते हुए स्वामी अग्निवेश। साथ में बहन प्रवेश आर्या, डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य एवं कल्याण सिंह आर्य

सत्र : प्रतिभागियों के विचार
समय : 04:30 बजे से 6:30 बजे तक
संसाधन व्यक्ति : स्वामी अग्निवेश

सभी प्रतिभागियों ने एक–एक करके अपने विचार अभिव्यक्त किए। उन्होंने बताया कि, किस प्रकार से वे प्रशिक्षण से जाने के बाद अपने–अपने क्षेत्र में वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा के अनुरूप काम करेंगे। पूजा आर्या और रीमा आर्या ने बताया कि, वे नारी–भ्रूण हत्या के खिलाफ एवं नारी सशक्तिकरण के लिए बहन प्रवेश आर्या और पूनम आर्या को सहयोग करेंगे। बहन पूनम आर्या ने कहा कि, वैचारिक शुद्धि के लिए वे शिविरों के माध्यम से युवाओं और युवतियों को प्रशिक्षित करती हैं। इससे समाज में स्वच्छ परिवेश के निर्माण में मदद मिलती है। प्रीति कुमारी, सबीता और मीरा ने बताया कि वे अपने समूदाय की किशोरियों को स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारधाराओं से अवगत करायेंगी। रोहतास ने बताया कि वे महिला सशक्तिकरण के लिए काम करते रहेंगे। मनजीत ने बताया कि वे बिहार में आर्य समाज के विचारधाराओं को प्रचारित प्रसारित करने के लिए समुदाय में काम करेंगे। राजा चौधरी ने बताया कि वे विश्वविद्यालयों में युथ क्लब और लाइब्रेरी के निर्माण का प्रस्ताव देंगे। आर्य पवन पागल ने कहा कि वे शराबबंदी के लिए आंदोलन चलाऐंगे। विपिन आर्य ने कहा कि, वे आगामी फरवरी–मार्च में सहारनपूर में स्वामी अग्निवेश जी के साथ कार्यक्रम का आयोजन करेंगे। डीएवी स्कूल के अष्ठम वर्ग के छात्र आदित्य ने कहा कि वे अपने स्कूल में अपने दोस्तों को गुटखा और खैनी के सेवन करने से मना करेंगे और साफ–सफाई के काम में सहयोग करेंगे। साहिल ने कहा कि वे प्राकृतिक जीवनशैली के प्रचार–प्रसार में डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य का सहयोग करेंगे। सुखवीर सिंह योगाचार्य हैं। इन्होंने कहा कि, ये विद्यालयों में योग प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करते हैं। इन्होंने कहा कि ये लोगों को शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अधिक से अधिक शिविरों का आयोजन करेंगे। दर्शन शास्त्री ने कहा कि वे आचार्य दयानन्द सरस्वती के जीवनमूल्यों को अपनाऐंगे। हरप्रीत ने कहा कि वे अपने कॉलेज में विद्यार्थियों को नशा छोड़ने के लिए कहेंगे। कल्याण सिंह आर्य ने कहा कि वे किसानों के हितों के लिए आंदोलन चलाते रहेंगे और स्वामी जी की सीख को अपने जीवन में अपनाऐंगे। सुनील कुमार ने कहा कि वे प्रकाशन के कार्यों द्वारा समाज में अग्रसर रहेंगे। सुरेश कुमार सिसोदिया ने कहा कि वे मीडिया प्रबंधन के माध्यम से शराबबंदी और स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन सिद्धांतों का प्रचार प्रसार करेंगे। कर्मवीर हान सिंह ने कहा कि, उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवनमूल्यों को अपनाने का संकल्प लिया है। ये हरियाणा के ज़िन्द में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन करेंगे।
स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि वे स्वयं और धर्म–प्रतिष्ठान के सहयोग से उपरोक्त कार्यक्रमों के आयोजन में यथोचित सहयोग प्रदान करने की कोशिश करेंगे। इसके बाद सत्र का समापन हुआ।

चित्र : रोहतास, दर्शन आर्य, स्वामी अग्निवेश, कल्याण सिंह आर्य एवं साहिल।

तत्पश्चात सभी प्रतिभागी स्वामी अग्निवेश जी के मार्गदर्शन में अग्नियोग आश्रम के निकट स्थित अरावली पर्वतमाला का दर्शन करने के लिए पदयात्रा पर गए। हमने रास्ते में जागरण गीत और क्रांतिगीत भी गाए। इस प्रकार प्रशिक्षण के पंचम दिवस का समापन हुआ। भ्रमण से आने के बाद हमने रात्रिभोजन और रात्री में विश्राम किया।

षष्ठम दिवस : 20 दिसम्बर 2016

सत्र : योग, प्राणायाम, ध्यान एवं अग्निहोत्र

समय : 7:00 बजे से 9:30 बजे तक

संसाधन व्यक्ति : डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य, बहन प्रवेश आर्या, एवं बहन पुनम आर्या

आज प्रशिक्षण का समापन दिवस था। सभी प्रतिभागी ससमय प्रशिक्षणकक्ष में प्रातःकालीन सत्र के लिए उपस्थित हुए। डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य ने सभी प्रतिभागियों ने प्राकृतिक चिकित्सा के व्यवहारिक पहलुओं के बारे में जानकारी दी। आज पुनः इन्होंने प्रतिभागियों को आहार, व्यायाम एवं संयमित जीवनशैली के बारे में सरल और सहज भाषा में समझाया। इन्होंने योगाभ्यास और प्राणायाम के साथ–साथ बताया कि हमें अपने भोजन में कच्चा अनाज का भी अधिक से अधिक सेवन करना चाहिए। इन्होंने कहा कि हमें पर्याप्त जल पीना चाहिए। तत्पश्चात सबने अग्निहोत्र किया। आज के हवन के लिए डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य ब्रह्मा के रूप में, यजमान के रूप में दर्शन शास्त्री, होता के रूप में प्रीति फुलकिरण, अध्वर्यु के रूप में सबीता कुमारी और उद्गाता के रूप में मीरा कुमारी ने अपनी भूमिका निभाई। वैदिक रीति से हवन के उपरांत सभी प्रतिभागियों ने नाश्ता किया। नाश्ता के बाद सभी प्रतिभागी दिवस के सत्र के लिए मुक्ताकाश प्रशिक्षण स्थल पर एकत्रित हुए।

सत्र : प्रतिभागियों द्वारा अनुभव साझा करना एवं समापन सत्र

समय : 10:30 बजे से 11:30 बजे तक

संसाधन व्यक्ति : सभी प्रतिभागी

इस सत्र में सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्राप्त अपने अनुभवों को एक–दुसरे से साझा किए। इससे सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान मिले सीख का पुर्नभ्यास हो गया। प्रतिभागियों ने बताया कि प्रशिक्षण से उनकी जो अपेक्षा थी उससे कहीं ज्यादा ज्ञान और अनुभव उन्हें प्राप्त हए। सभी प्रतिभागी स्वामी अग्निवेश जी के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। उन्होंने विदेशी मेहमानों के साथ बिताए पलों को भी याद किया। सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के प्रशिक्षकगण अगस्टीन जे वैलिथ, डीजीपी आनंद कुमार, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, ग्लेन टी मार्टिन, डॉ. अंजनी कुमार सिंह, डीजीपी वी एन राय, डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य, बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या के प्रति सभी ने विशेष आभार अभिव्यक्त किया। भोजन एवं आवासीय व्यवस्था के लिए अंजनी जी का सभी ने सहृदय धन्यवादज्ञापन किया। स्वामी जी ने बताया कि आश्रम की व्यवस्था धर्म–प्रतिष्ठान के न्यासी प्रोफेसर श्योताज सिंह जी करते हैं। आश्रम के नैसर्गिक और प्राकृतिक परिवेश के लिए सभी प्रतिभागियों ने प्रोफेसर श्योताज सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया। आर्य पवन पागल जी ने इच्छा अभिव्यक्त किया कि, इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम का नियमित अंतराल पर आयोजन होते रहना चाहिए। इससे प्रतिभागियों को व्यक्तित्व विकास का अनुपम अवसर प्राप्त होगा। वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा पर आधारित कार्यक्रमों के संपादन में सभी ने अपनी अभिरूचि ज़ाहिर की। रोहतास जी ने सलाह दिया कि प्रत्येक प्रशिक्षण सत्र के दौरान स्वामी जी के साथ पहाड़ी पर घुमने का कार्यक्रम जरूर रखना चाहिए। इसमें बहुत आनंद आया। श्री कल्याण सिंह आर्य ने सुझाव दिया कि, यदि प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन के लिए फंड की व्यवस्था हो सके तो सभी प्रतिभागियों के आने–जाने के खर्च का भी प्रबंध किया जा सकता है। इससे आर्थिक रूप से कमजोड़ प्रतिभागियों को भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य ने अपनी इच्छा जाहिर किया कि वे ''एक साप्ताह के प्राकृतिक जीवनशैली विषय पर व्यवहारिक प्रशिक्षण शिविर'' का आयोजन अग्नियोग आश्रम में आयोजित करना चाहेंगे। इससे लोगों को स्वस्थ जीवन जीने का प्रेरणा मिलेगा और वे पुरी ऊर्जा के साथ सामाजिक कार्यों में अपना योगदान दे सकेंगे।

चित्र : प्रतिभागियों के साथ स्वामी अग्निवेश जी एवं भूतपूर्व डीजीपी वी एन राय।

स्वामी अग्निवेश जी ने सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया और उनके स्वर्णिम भविष्य की कामना की। इन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि अगले प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए वे अपने अपने क्षेत्र से एक–दो प्रतिभागियों का नाम प्रस्तावित करें। धर्म–प्रतिष्ठान के तत्वावधान में अग्नियोग आश्रम उनके व्यक्तित्व विकास में अपना भरपूर योगदान देगा। सभी प्रतिभागियों ने स्वामी जी के साथ बिताए पलों का अपने जीवन का अविस्मरणीय क्षण बताते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया। इसके पश्चात सब ने दोपहर का भोजन किया और स्वामी जी के साथ सेल्फी भी लिए। भोजन के बाद सुरेश कुमार सिसोदिया जी ने ''प्रेस मीटिंग'' का आयोजन किया था। इस प्रेस मीटिंग में भाग लेने के लिए 8 मिडिया के प्रतिनिधी आए थे। मीडिया प्रतिनिधियों ने भोजन के बाद स्वामी अग्निवेश जी के साथ प्रेस मीटिंग किए। तत्पश्चात प्रशिक्षण सत्र का समापन हो गया। सभी प्रतिभागियों को सभी प्रतिभागियों का मोबाईल नंबर दिया गया। उन्होंने एक–दुसरे के कार्यक्रम में सहयोग करने का भरोसा दिया। विदा होने के समय ऐसा लग रहा था जैसे सभी प्रतिभागी अपने परिवार के किसी सदस्य से जुदा हो रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान एक–दुसरे के सहयोग के लिए सभी ने एक–दुसरे का धन्यवाद किया और सुखद जीवन की शुभकामनाऐं दी। इसके बाद प्रतिभागी अपने अपने कार्यक्षेत्र की ओर नई ऊर्जा और दृढ़ संकल्प के साथ निकल पड़े। उनकी आँखों में संतुष्टि का भाव साफ–साफ झलक रहा था। उनके चेहरे पर संकल्प और ज्ञान का तेज था और मन में समाज सेवा करने की सच्ची प्रेरणा।

उपसंहार

मुझे पुरा विश्वास है कि, वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा से प्रेरित ये प्रशिक्षित प्रतिभागी अपने–अपने क्षेत्र में अपनी पुरी क्षमता के साथ जुट जाऐंगे और समाज में सकारात्मक सामाजिक–आर्थिक–आध्यात्मिक परिवर्तन के वाहक बनेंगे। सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्राप्ति में इनकी सक्रिय भूमिका रहेगी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना निर्माण और संचालन से मुझे असीम आनंद और संतुष्टि की अनुभूति हुई। सभी प्रतिभागी अपने–आप में अद्भूत प्रतिभा के धनी थे और उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली। परस्पर प्रेमभाव और सहयोग की भावना से प्रेरित इनके साथ बिताए क्षणों में मुझे असीम शांति की अनुभूति हुई कि, भले ही विश्व समुदाय कई प्रकार की समस्याओं से जुझ रहा है और अधिकांश लोग निष्क्रिय रूप से अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए जी रहे हैं। फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो समाज के दीन–दुखियों, दलितों और पीड़ितों की सेवा और उनकी भलाई के लिए अपने व्यक्तिगत भौतिक सुख–सुविधा की तिलांजलि देकर अपने तन–मन और धन से लोकसेवार्थ अपना जीवन समर्पित करने के लिए भी पुरी तन्मयता के साथ प्रयत्न करने को तैयार हैं। वे समाज में प्रेरणा स्त्रोत के रूप में लोगों को असत्य से सत्य की ओर, तिमिर से प्रकाश के लिए और मृतप्राय जीवनशैली से अमृतमय जीवन की ओर अग्रसर करते रहेंगे और लोगों के विकास के सहयोगी बनेंगे। ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में, देवदूत के रूप में वे सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के लिए वे प्रयासरत्त रहेंगे। समाज में स्वामी अग्निवेश जी जैसे आध्यात्मिक–सामाजिक नेतृत्वकर्त्ता भी हैं जिनका जीवन लोकहित में समर्पित रहा है। डीजीपी आनंद कुमार और वी एन राय जैसे वरिष्ठ प्रशासनिक पदाधिकारी भी हैं जिन्होंने आजीवन वरिष्ठ प्रशासनिक पदों पर कार्य करते हुए भी अंतिम जन के प्रति अपने संकल्पों और जिम्मेदारियों का सेवाभाव से निर्वाह किया। डॉ. वेद प्रताप वैदिक जैसे वरिष्ठ सामाजिक चिंतक और विचारक भी हैं, जिनकी लेखनी बेबाक रूप से सत्ताधारियों को लोकहितों की हिफाजत करने के लिए सचेत करने के लिए अनवरत चलती रही हैं और लोगों की आवाज को सत्ताधिकारियों और सरकार के नीति–निर्माताओं तक निरंतर पहुँचाती रही हैं और उन्हें बारंबार उनके कर्तव्यों के प्रति सचेत किया है और मार्गदर्शन भी दिया है। डॉ. ग्लेन टी मार्टिन जैसे अंतर्राष्ट्रीय चिंतक और विचारक भी हैं जो विभिन्न सरकारों, धार्मिक नेताओं और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को मानवाधिकारों पर आधारित नीतियों के निर्माण और क्रियान्यवन के लिए निरंतर परामर्श देते रहते हैं और वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा पर आधारित विदेश नीतियों के निर्माण एवं क्रियान्यवन के लिए प्रेरित करते हैं। श्री अगस्टीन जे वैलिथ जैसे सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं जो गरीबों और असहायों के लिए लाभप्रद नीतियों के निर्माण और क्रियान्यवन के लिए ज़मीनी स्तर के और व्यवहारिक परामर्श देते रहते हैं। डॉ. अंजनी कुमार सिंह जैसे सरकारी महकमा के पदाधिकारी भी हैं जो छुट्टी के दिन भी सामाजिक आयोजनों में शामिल होकर लोगों के सुखद भविष्य के लिए मार्गदर्शन देते रहते हैं। डॉ. ब्रजेन्द्र आर्य जैसे वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक भी हैं जो प्राकृतिक जीवनशैली के आधार पर स्वस्थ और निरोग जीवनशैली अपनाने के लिए लोगों को अनमोल ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं। श्री सुरेश कुमार सिसोदिया जैसे प्रोफेशनल भी हैं जो अपने व्यवसायिक आर्थिक हितों को ताख पर रखकर सामाजिक कार्यों में निःस्वार्थ और पुरी तल्लीनता से अपनी सक्रिय और बहुमुल्य भूमिका निभाने को भी तत्पर रहते हैं। श्री सुखवीर सिंह जैसे युवा योगाचार्य भी हैं जो वैवाहिक जीवन और दो बच्चों के पिता होने के बावजूद ब्रह्मचर्य जीवन जीते हैं और योगविधा के महारत्त होने के बावजूद अपार आर्थिक लाभ के अवसरों की तिलांजलि देकर निर्धनों के जीवन में प्राणशक्ति और शारीरिक पुरूषार्थ का मंत्र फुंकने के लिए पुरी तन्मयता के साथ अग्रसर हैं। बहन प्रवेश आर्या और पूनम आर्या जैसी विदुषी साध्वी भी हैं जो व्यक्तित्व के महिमामंडन और ख्याति की लौकिक अभिलाषा को त्यागकर समाज के युवा–युवतियों और महिलाओं के हितों के लिए वर्षों से अथक और अनवरत प्रयास कर रही हैं। मीरा, सबीता, प्रीति कुमारी, पुजा आर्या और रीमा आर्या जैसी युवती नेतृत्वकर्त्ता भी हैं जो समाज की दलित और उपेक्षित किशोरियों के लिए प्रेरणास्तंभ बन रही हैं और उन्हें समाज में आगे आकर अन्य पिछड़ी बहनों के सशक्तिकरण के लिए प्रसास करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। आर्य पवन पागल जैसे चित्रकार भी हैं जो अपनी कलासाधना को निःस्वार्थ भाव से लोककल्याण में बेझक होकर समर्पित करते हैं। राजा चौधरी जैसे युवा चिंतक एवं लेखक भी हैं जो धर्म और सामाजिक सिद्धांतों का गहन अध्ययन कर समाज को वसुधैव कुटुम्बकम और समतामूलक सिद्धांतों के

प्रचार–प्रसार के लिए निर्भिक और पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्यरत्त हैं। विपीन आर्य जैसे युवा पत्रकार भी हैं जिनकी लेखनी समाज में सकारात्मक विचारों का प्राण संचार करने के लिए निरंतर चल रही हैं। मंजीत कुमार जैसे युवा भी हैं जो आर्थिक समस्याओं का सामना करते हुए भी सामाजिक कार्यों में निःस्वार्थ रू‍प से बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं। रोहतास जैसे नारीवादी भी हैं जो महिलाओं के हितों की हिफाजत के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने से भी पीछे नहीं हटते। फिरोज खान जैसे मुस्लिम भी हैं जो गोहत्या के खिलाफ सरकारी कानून के लिए व्यापक स्तर पर मुहिम चला रहे हैं। तनवीर खान जैसे सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता भी हैं जो गरीबों के मानवाधिकारों के लिए निःशुल्क सहायता करने को तत्पर रहते हैं। स्वामी त्रिलोकनाथ महाराज जैसे धार्मिक नेता भी हैं जो धार्मिक कुरीतियों पर कुठाराघात करते हैं और लोगों को मानवीय मूल्यों को आत्मसात कर समाजसेवा की प्रेरणा देते हैं। के के शरत्चंद्र बोस जैसे एनआरआई भी हैं जो दुबई में रहते हुए भी भारत के गरीबों के कल्याण की योजनाओं को सहयोग करते हैं। संजय जैन और लालेश्वर पाण्डेय जैसे सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं जो समाज को प्रेरित करते हैं। नित्येन्द्र मानव जैसे युवा सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं जो शराब माफिया के खिलाफ मुहिम चलाते हैं और अपनी जान पर भी खेल जाते हैं। कर्मवीर हान सिंह जैसे समीक्षक और आलोचक भी हैं जो बड़े–बड़े विद्वजनों और प्रभावशाली व्यक्तित्वों को भी अपने आचरण एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन करने के लिए सोंचने के लिए बाध्य कर दें। हरप्रीत, प्रवीण अत्री और साहिल जैसे युवा विद्यार्थी भी हैं जो सामाजिक परिवर्तन के वाहक बनने के लिए पुरी तरह से समर्पित हैं। हंसराज भारतीय जैसे प्रभावशाली सामाजिक समन्यवक भी हैं जो दलितों की आवाज को बेबाकी के साथ सरकारी पदाधिकारियों और सत्ताधारियों तक पहुँचाते हैं। श्री कल्याण सिंह आर्य, महेश सायता और भीमराज बैग जैसे सामाजिक कार्यकर्त्ता भी हैं जो बुद्धिजीवी और सामाजिक रू‍प से सम्मानित सदस्य होने के बावजूद सेवाकार्य और शौचालय की साफ–सफाई भी पूरी तन्मयता से करते हैं। आदित्य आर्य जैसे आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले विद्यार्थी भी हैं जो बाल्यकाल की अल्हड़ता को छोड़कर व्यापक वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए आयोजित कार्य{मों में भी पूरी जिज्ञासा और गंभीरता के साथ शामिल होते हैं और अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत करते हैं। जरूरत है इन जैसे समाज के ज्योतिपुंजों को संगठित करके इनमें वैज्ञानिक विधियों पर आधारित विशिष्ट प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञान, व्यवहारिक और सामाजिक कौशल, एवं आत्मविश्वास की इंधन भरने की और इनके आध्यात्मिक लौ को तेज करने की ताकि ये विभिन्न भौगौलिक क्षेत्रों में निवास करनेवाले लोगों के जीवन से अज्ञान, अभाव और अन्याय के चिरव्याप्त अंधेरे को दूर करके उनके जीवन को सत्य, श्री और न्याय के प्रकाश से उदीयमान बना दें। स्वामी अग्निवेश जी के मार्गदर्शन में धर्म प्रतिष्ठान परिवार इस दिशा में पूरी समर्पण और निष्ठा के साथ सक्रिय है। आप सभी पाठकों के सहयोग से धर्म प्रतिष्ठान परिवार सुनिश्चित रू‍प से वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा पर आधारित सतत विकास लक्ष्य 2030 की प्राप्ति में में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

प्रशिक्षण शिविर से संबंधित समाचार पत्रों में प्रकाशित खबरें

भारत व पाक हथियारों पर नहीं, दोस्ती के लिए खर्च करें रुपए : स्वामी अग्निवेश

गांव बहल्पा में आयोजित धर्म प्रतिष्ठान के समापन समारोह में की शिरकत

कहा-काला धन नोटों में कम सोना व बेनामी संपत्ति में अधिक है

भास्कर न्यूज | सोहना

स्वामी अग्निवेश ने कहा कि भारत और पाकिस्तान ऐसे देश हैं, जो सबसे अधिक रुपए हथियार खरीदने में खर्च करते हैं। अगर दोनों देश इसका एक फीसदी हिस्सा दोस्ती पर खर्च करें, तो हालात सामान्य हो जाएंगे। स्वामी अग्निवेश मंगलवार को गांव बहल्पा में आयोजित धर्म प्रतिष्ठान के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारत में प्रेम विवाह अधिक होने चाहिए। साथ ही स्वयंवर प्रथा दोबारा शुरू करना चाहिए। इतिहास गवाह है कि जब तक देश में स्वयंवर के जरिए विवाह हुए जब तक देश ने तरक्की की। इसके बंद होने के बाद से देश पतन की तरफ बढ़ रहा है। उन्होंने नोट बंदी को लेकर कहा कि जिस तरह केंद्र सरकार ने नोट बंदी की है, उसी तरह उसे शराब बंदी भी करनी चाहिए। काला धन नोटों से ज्यादा सोना और बेनामी जायदाद के रूप में अधिक है। सरकार को यह कदम अंतिम नहीं समझना चाहिए। इस मौके के पर स्वामी आर्यवेश, डॉ. गलैन टी मार्केट, बिजेंद्र आर्य, वीरेंद्र कुमार सोनी, पूनम आर्य, प्रवेश आर्य, हंसराज भारतीय मौजूद रहे।

सोहना. पत्रकारों से बातचीत करते हुए स्वामी अग्निवेश।

दूसरी राजनीतिक पारी की तैयारी में स्वामी अग्निवेश

सोहना | हमारे संवाददाता

स्वामी अग्निवेश फिर से राजनीतिक पारी शुरू करने की तैयारी में हैं। उन्होंने दावा किया कि हरियाणा में अब वह चुनाव लड़ाने का काम करेंगे। इसके लिए ग्राम पंचायत से लेकर लोकसभा तक के लिए उम्मीदवार उतारेंगे।

स्वामी अग्निवेश मंगलवार को बहलपा स्थित अग्निलोक आश्रम में आयोजित पांच दिवसीय देवदूत प्रशिक्षण शिविर के समापन के मौके पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हरियाणा में चुनावी समर शुरू होने वाला है। हालांकि उन्होंने किसी नए राजनीतिक दल बनाने की बात को खारिज कर दिया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई दल उन्हें अवसर देता है तो वह उसे छोड़ने वाले नहीं हैं।

स्वामी ने कहा कि इस समय भारत एवं पाकिस्तान दोनों देश हथियार खरीदने की होड़ में हैं। एक बड़ी पूंजी केवल हथियार खरीदने पर खर्च की जा रही है। यह काफी दुखद है।

आतंकवाद भ्रष्टाचार व सांप्रदायिकता देश के लिए घातक : स्वामी अग्निवेश

कहा, जातिवाद पर आधारित राजनीति का ध्रुवीकरण न करें अवसरवादी नेता

अशोक गर्ग, सोहना

गांव बहल्पा स्थित अगिनयोग आश्रम में पांच दिवसीय शिविर का मंगलवार को समापन हो गया। इस शिविर में राइट लाइवलीहुड अवॉर्डी एवं पूर्व शिक्षा मंत्री स्वामी अग्निवेश ने कहा है कि देश के लोगों की मानसिकता को बदलना होगा। युवाओं के इस देश में फैलते जा रहे अंधविशवास, रूढ़ीवादिता, विषमता, भ्रष्टाचार, आतंवाद, जातिवाद, संप्रायिकता, संक्रीर्णता, धर्म के नाम पर राजनीति के ध्रुवीकरण जैसै अपवाद को जड़ मूल से दूर करना ही इस शिविर का उद्देश्य है। हर माह ऐसे जागरूकता के शिविरों में देश के जागरूक प्रतिनिधियों को संदेश दिए जाते रहेंगे। जब तक देश का युवा राजनीति में सक्रिय भूमिका अदा नहीं करेगा। इस भारत देश का सही मायनों में विकास संभव नहीं है। उन्होंने ये बात गांव बहल्पा स्थित आश्रम में धर्म प्रतिष्ठान के तत्वाधान में आयोजित वसुदैव कुटुम्बकम के वैश्विक मानवीय सिद्वांत पर आध्यात्म की भूमिका विषय पर आधारित पांच दिवसीय आवासीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में देश के कोने-कोने से आए जागरूक प्रतिनिधियों के समक्ष व्यक्त किए। इस शिविर में पैंतीस प्रतिनिधियों ने शिरकत की। उन्होंने बताया कि देश की वैदिक संस्कृति मानवता, सत्यता, प्रेम व करूणा का आधार है। देश में जातिवाद का खात्मा हो ना चाहिए तथा काबिलियत व गुणों के आधार पर स्वयंवर रच कर प्रेम विवाह की प्रथा को मान्यता मिलनी चाहिए। देश में राजनेता धर्म के नाम पर लोगों को बांट कर संकीर्णता की राजनीति कर रहे हैं जो देश के लिए घातक हैं। अंधविश्वास व पाखंड को मिटाना होगा।

देश दुनिया में राजनीतिक परिवर्तन जरूरी है राजनीति का गुणात्मक परिवर्तन होगा तो ही देश से भ्रष्टाचार व आतंकवाद मिट सकेगा उन्होंने बताया कि देश की सेना पर भारी बजट खर्च करना ठीक नहीं है। दोनों देश भारत व पाकिस्तान के रिश्तों में भाईचारा, मित्रता, सौहार्दपूर्ण संवाद, व आपसी प्रेम प्यार की जरूरत है न कि भारी भरकम हथियारों का जखीरा जोड़ने की। देश के विकास में ये पैसा लगाया जाना चाहिए शिक्षा व स्वास्थ्य में उतना पैसा सरकार खर्च नहीं करती जितना करना चाहिए। समाजवाद से दूर पूंजीवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने ये माना कि आंतकवाद व भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए मोदी का नोटबंदी का फैसला जायज है। पुणे में प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय बैठक में वे इस मुद्दे पर चर्चा करेंगे। इस अवसर पर विश्व संविधान एवं संसद संगठन के अध्यक्ष डाक्टरगलेन टी मार्टिन, डॉक्टर बिजेंद्र आर्य, वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनैतिक चिंतक वेद प्रताप वैदिक, पूर्व डायरेक्टर अगस्टीन जे वेलिथ, सामाजिक कार्यकर्ता प्रवेश आर्या, पूनम आर्या, भूतपूर्व डीजीपी वी. एन. राय, आरिफ मुहम्मद, चंदन कुमार मिश्र, वीरेंद्र कुमार सोनी, सहित अनेक लोगों ने इस शिविर में अपने विचार रख देश में समानता व समरसता की अलख जगाने का संकल्प लिया।

फिर जागृत हुई स्वामी अग्निवेश की राजनीतिक महत्वाकांक्षा

अच्छी राजनीति चाहने वालों को देंगे संस्कारों का ज्ञान

हमारे प्रतिनिधि
गुरुग्राम, 20 दिसंबर

हरियाणा में विधायक व मंत्री रह चुके आर्य समाजी संत स्वामी अग्निवेश के अंदर लंबे समय के बाद फिर से राजनीतिक महत्वाकांक्षा जगी है। वे बिना राजनीतिक पार्टी के गठन के ही पंचायत से लेकर लोकसभा तक का चुनाव लड़ेंगे और लड़वाएंगे। इस बार भी उन्होंने राजनीतिक कर्मस्थली हरियाणा को ही बनाने का ऐलान किया है। उन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 'मतलब के लिए इस्तेमाल करने वाला' बताते हुए उनके साथ किसी भी तरह से मंच साझा करने से इनकार किया है।

गांव बहल्पा स्थित अपने अग्निलोक आश्रम में मंगलवार को 5 दिवसीय संगोष्ठी के समापन पर स्वामी अग्निवेश ने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा साझा की। उन्होंने कहा कि 'वर्तमान में राजनीति जिस राह पर चल रही है, उसमें परिवर्तन की बहुत ज्यादा जरूरत महसूस होती है। यह परिवर्तन तभी संभव है जब संस्कारवान लोग आगे आएं, चाहे वे किसी भी पार्टी से हों।' उन्होंने कहा कि 'हम कोई राजनीतिक पार्टी का गठन करने नहीं जा रहे, राजनीति में आने या अच्छी राजनीति की चाह रखने वालों को ही संस्कारों का ज्ञान देंगे। फिर वे चाहे किसी भी पार्टी में रहें लेकिन उन्हें जीताने का प्रयास करेंगे।'

स्वामी अग्निवेश ने अपनी दूसरी राजनीतिक पारी की शुरुआत भी हरियाणा से ही करने की बात कही तथा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का हरियाणा में समर्थन करने या मंच साझा करने से इनकार किया। उन्होंने कहा कि केजरीवाल ने तत्कालीन मंत्री कपिल सिब्बल के खिलाफ जनमत संग्रह करने में उनका व आर्यसमाज का इस्तेमाल किया और बाद में उल्टा उन्हीं (स्वामी अग्निवेश) के ऊपर आरोप लगा दिए।

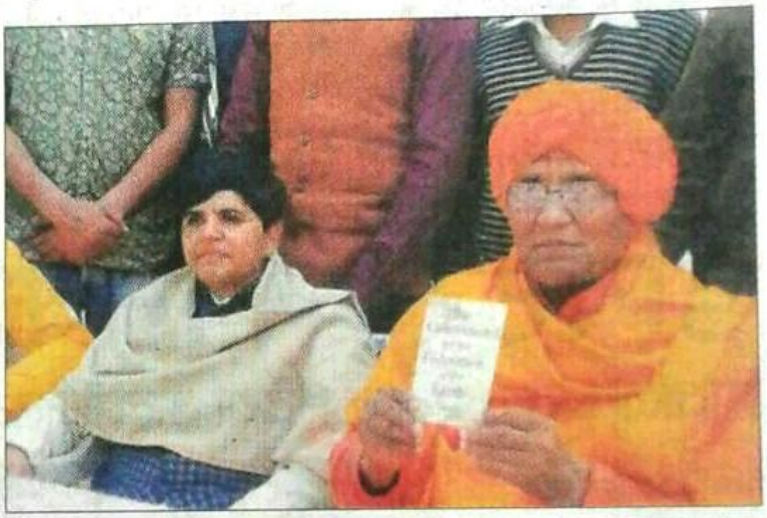

गुरुग्राम के बहल्पा में मंगलवार को शिविर के समापन पर पत्रकारों से बातचीत करते स्वामी अग्निवेश। - हप्र

वर्ष 1977 में बने थे शिक्षा मंत्री

ध्यान रहे वर्ष 1977 में चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे स्वामी अग्निवेश को शिक्षा मंत्री बनाया गया था, इसके बाद उन्होंने कई चुनाव लड़े लेकिन दोबारा सफलता नहीं मिली। वर्ष 2011 में गांधीवादी नेता अण्णा हजारे के दिल्ली में चले भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन के दौरान वे उनके मंच पर रहे। इस बीच अरविंद केजरीवाल के साथ करीबी और बाद में विवाद के कारण चर्चित रहे।

सरकार की ईमानदारी संदेह के दायरे में : अग्निवेश

सोहना | हमारे संवाददाता

स्वामी अग्निवेश ने नोटबंदी को लेकर केन्द्र सरकार पर कड़ा प्रहार किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने नोटबंदी का फैसला तो सही लिया, लेकिन इनकी ईमानदारी संदेह के दायरे में है। उन्होंने केन्द्र सरकार को विदेशों में जमा एक सौ 14 हजार करोड़ के काले धन को वापस लाने की सलाह दी।

स्वामी अग्निवेश शनिवार को सोहना के बहलपा गांव स्थित अपने अग्निलोक आश्रम में आयोजित पांच दिवसीय नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर को संबोधित कर रहे थे। 20 दिसंबर तक चलने वाले शिविर में राज्य भर से 32 प्रशिक्षु भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षु एक परमात्मा, एक मानव परिवार व एक संसार का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

स्वामी अग्निवेश ने कालाधन निकालने के लिए नोटबंदी के फैसले को

प्रहार

- स्वामी अग्निवेश ने नोटबंदी पर केन्द्र सरकार पर निशाना साधा
- भाजपा ने अपने नेताओं को पहले ही फैसले की जानकारी दे दी

सही ठहराया लेकिन कहा कि यदि ईमानदारी से इस फैसले को लागू किया जाए तो बेहतर परिणाम आ सकता है। स्वामी ने दावा किया कि भाजपा ने इस फैसले को लागू करने से पहले अपने नेताओं को सचेत कर दिया था। इसी इन नेताओं ने पहले ही अपने काले धन को सफेद कर लिया। वहीं जनता अपनी गाढ़ी कमाई को लेकर परेशान है।

राहुल पर भी साधा निशाना : स्वामी अग्निवेश ने गुब्बारा फूटने वाले बयान को लेकर राहुल गांधी को बचकाना बातें न करने की नसीहत दी। उन्होंने कहा कि सबूत है तो उसे उजागर करें

आज स
www.aajsamaaj
बुधवार, 21 दिसम्बर 2016
दिल्ली/गुड़गांव/फ

04

वाहन चालक को लूटने वाले दो गिरफ्तार

भारत-पाक को दोस्ती पर खर्च करना चाहिए: स्वामी

सोहना। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि भारत एक मात्र ऐसा देश है जो सबसे अधिक राशि हथियार खरीदने में खर्च करता है। अगर दोनों देश इसका एक प्रतिशत राशि भी दोस्ती पर खर्च करे तो हालात सामान्य हो जाएगें। यह बात उन्होंने निकटवर्ती गांव बहलपा में आयोजित धर्म प्रतिष्ठान के समापन समारोह में कही। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि भारत में प्रेम विवाह अधिक होने चाहिए। स्वयंवर प्रथा को दोबारा शुरू करना चहिए। इतिहास गवाह है कि जब तक देश में स्वयंवर के जरिए विवाह हुए जब तक देश ने तरक्की की। जब से यह बंद हुए है तब से देश पतन की तरफ अग्रसर हो रहा है।

समापन समारोह में मौजूद स्वामी अग्निवेश व समाजसेवी। आज समाज

उन्होंने यह भी कहा कि जिस तरह केंद्र सरकार ने नोटबंदी की है उसी तरह शराबबंदी भी करनी चहिए। काला धन मात्र नोटों के माध्यम से कम है लेकिन सोना व बेनामी जायदाद के रूप में अधिक है। सरकार को यह कदम अंतिम नहीं समझना चहिए। यहां पर स्वामी आर्यवेश, डॉ. ग्लैन टी मार्किट, बिजेन्द्र आर्य, विरेंद्र कुमार सोनी, पूनम आर्य, प्रवेश आर्य व हसंराज मौजूद थे।

लोगों की मानसिकता को बदलना होगा

सोहना (ब्यूरो)। गांव बहलपा स्थित अग्नि योग आश्रम में लगे पांच दिवसीय शिविर का मंगलवार को समापन हो गया। शिविर में राइट लाइवलीहुड अवॉर्डी एवं पूर्व शिक्षा मंत्री स्वामी अग्निवेश ने कहा कि देश के लोगों की मानसिकता को बदलना होगा। शिविर में 35 प्रतिनिधियों ने शिरकत की। हर माह जागरूकता शिविरों में देश के जागरूक प्रतिनिधियों को संदेश दिया जाएगा। जब तक देश का युवा राजनीति में सक्रिय भूमिका अदा नहीं करेगा, तब तक देश का सही मायनों में विकास संभव नहीं है। पांच दिवसीय आवासीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में देश के हर कोने से आए जागरूक प्रतिनिधियों ने विचार व्यक्त किए।

*****